



न्यूज डायरी

...तो तुरंत केस करें और संपत्ति जल्द करें : मरांडी

रांची। बाबूलाल मरांडी ने दुमका में जनसभा में हेमंत सरकार को चैलेंज किया है। ताल टोकते हुए भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि यदि संशाल परगना बिल्डर्स प्राइवेट लिमिटेड कंपनी में मेरा पैसा लगा है तो अविलंब केस करें और संपत्ति जल्द कर लें। गलतबयानी और मुझ पर आरोप लगा गुमराह न करें।

माता यशोदा डुमरी का लालन पालन करेंगी: सुदेश महतो

रांची। डुमरी उपचुनाव को लेकर राजनीतिक सरगमीं उफान पर है। एनडीए की उम्मीदवार यशोदा देवी आजसू के चुनाव चिह्न के साथ मैदान में है। आजसू सुप्रियो सुदेश कुमार महतो ने शनिवार को 9 जनसभाएं कर पार्टी उम्मीदवार के पक्ष में मतदान की अपील की। उन्होंने कहा कि डुमरी की जनता का लालन-पान करने खुद माता यशोदा मैदान में हैं। कहा कि डुमरी की यह लड़ाई राजा और रक के बीच की है।

मोदी ने जय विज्ञान-जय अनुसंधान को किया बुलंद

बंगलुरु। पीएम मोदी ने शनिवार को ग्रीस से बंगलुरु पहुंचने के बाद इसरो के वैज्ञानिकों से मुलाकात की। कड़ी सुरक्षा के बीच पीएम मोदी ने लोगों का अभिवादन स्वीकार किया। वहीं, एयरएल हवाई अड्डे के बाहर पीएम मोदी ने जय विज्ञान जय किसान के नारे में 'जय विज्ञान जय अनुसंधान' का नारा बुलंद किया। उन्होंने इसरो तक एक रोड-शो भी किया।

कुएं में गिरा हाथी का बच्चा, रेस्क्यू जारी

रामगढ़। गोला प्रखंड में शनिवार को झुंड से बिछड़ा हाथी का एक बच्चा संरंगाट्ट के पास एक कुएं में जा गिरा। ग्रामीणों ने सूचना वन विभाग के अधिकारियों को भी दी है। डीएफओ नीतीश कुमार ने बताया कि वन विभाग की रेस्क्यू टीम भी हाथी के बच्चे को कुएं से बाहर निकलने में जुटी हुई है।

ट्रेन में आग लगने से नौ यात्रियों की मौत

चेन्नई। तमिलनाडु के मद्रुरै रेलवे स्टेशन के पास शनिवार को एक रेलवे कोच में आग लगने से सुप्री के नौ तीर्थयात्रियों की जलकर मौत हो गयी। मृतकों में तीन महिलाएं शामिल हैं। कई लोग झुलसे हैं।

पांडू थाना प्रभारी लाइन हाजिर, दो प्रभारी हटे

पलामू। बुधुर्ग के साथ मारपीट के आरोप में पांडू थाना के प्रभारी पवन कुमार को हटा दिया गया है। कारावादी करते हुए खब इन्स्पेक्टर पवन कुमार को लाइन हाजिर किया गया है। वहीं मेदिनीनगर टीओपी 2 के प्रभारी और दंगवार ओपी प्रभारी को भी लाइन हाजिर किया गया है।

प्रमोद से पांच राज्यों की पुलिस करेगी पूछताछ

गया। बिहार के गया जेल में बंद प्रतिबंधित नक्सली संगठन भाकपा माओवादी के शीर्ष लीडर प्रमोद मिश्रा और उसके सहयोगी अनिल यादव को पुलिस रिमांड पर लिया गया है। रिमांड में कई केंद्रीय एजेंसियां भी प्रमोद से पूछताछ करेंगी।

दो को होगा आदित्य-एल। सौर मिशन का प्रक्षेपण!

बंगलुरु। चसूर्य का अध्ययन करने के लिए इसरो शीघ्र 'आदित्य-एल।' सौर मिशन भेजने की तैयारियों में जुट गया है। आदित्य-एल। मिशन को दो सितंबर को भेजे जाने की संभावना है।

सोना (किग्री)	: 55,300 रु./10 बाब
चांदी	: 74,000 रु. प्रति किग्री

खबरमन्त्रा

सबकी बात सबके साथ

इसरो मुख्यालय जा कर वैज्ञानिकों से बोले पीएम मोदी- आपको सलाम करने को बैचैन था...

चंद्रयान-3 का लैंडिंग प्वाइंट अब शिव-शक्ति

चंद्रयान-2 ने जहां पदचिह्न छोड़े थे, वह तिरंगा पॉइंट कहलायेगा

अंगद के पांव की तरह चांद की सतह पर जमा है लैंडर



चंद्रयान-3 मिशन की सफलता के बाद शनिवार को इसरो के वैज्ञानिकों की टीम के साथ पीएम नरेंद्र मोदी।



23 अगस्त अब राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस

पीएम मोदी ने चंद्रयान-3 मिशन की सफलता को भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम के इतिहास का असाधारण क्षण करार दिया। उन्होंने कहा कि भारत अपने इस ऐतिहासिक सफलता की याद में 23 अगस्त की तारीख राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस के रूप में मनायेगा। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस हर वर्ष

एजेंसी

बंगलुरु। पीएम मोदी चंद्रयान-3 मिशन की सफलता के बाद भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के वैज्ञानिकों से मिलने के लिए यूनान की राजधानी एथेंस से शनिवार को सीधे बंगलुरु पहुंचे। उन्होंने घोषणा की है कि चंद्रयान-3 लैंडर चंद्रमा की सतह पर जिस स्थान पर उतरा है, उसका नाम शिव-शक्ति पॉइंट रखा जायेगा, जो कल्याण एवं ताकत का मेल है। वहीं चंद्रमा की सतह पर जिस स्थान पर चंद्रयान-2 ने 2019

में अपने पदचिह्न छोड़े थे, उसे तिरंगा पॉइंट के नाम से जाना जायेगा। तिरंगा पॉइंट भारत के हर प्रयास की प्रेरणा बनेगा और सीख देगा कि कोई भी विफलता आखिरी नहीं होती।

पीएम ने कहा- हम वहां पहुंचे हैं, जहां कोई नहीं पहुंचा है। हमने वह किया, जो पहले कभी किसी ने नहीं

किया। यह आज का भारत है- निर्भीक भारत, जुझारू भारत। विक्रम लैंडर की सॉफ्ट लैंडिंग कोई साधारण उपलब्धि नहीं है और यह अनंत ब्रह्मांड में भारत

की वैज्ञानिक उपलब्धि का संख्यान है। आपकी जितनी तारीफ करें, कम है : पीएम वहां स्थित इसरो टेलीमेट्री ट्रैकिंग एंड कमांड नेटवर्क (आईएस्टी

आरएसी) में वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए भावुक हो गये और उन्होंने उनके समर्पण एवं जुनून की खूब प्रशंसा की। (शेष पेज 11 पर)

नौ घंटे पूछताछ में तिवारी ब्रदर्थ ने इडी समक्ष किये कई खुलासे

शराब घोटाला मामले

रांची। शराब घोटाला मामले में शनिवार को योगेंद्र तिवारी और उसके भाई अमरेंद्र तिवारी से इडी दफ्तर में नौ घंटे तक पूछताछ हुई। इडी अधिकारियों ने लंबी पूछताछ के बाद रात 9.30 बजे छोड़ दिया। समन जारी होने के बाद दोनों भाइयों को शनिवार 11 बजे पहुंचना था, लेकिन डेढ़ घंटे लेट से दोनों इडी कार्यालय पहुंचे। बताया जा रहा है कि इडी को तिवारी ब्रदर्थ ने शराब घोटाले से संबंधित कुछ ब्यूरोक्रेसी के नाम बताये हैं। इडी ने सोमवार को योगेंद्र तिवारी को फिर से पूछताछ के लिए तलब किया है।

घोटाले का किंगपिन है तिवारी :

शराब घोटाले के किंगपिन योगेंद्र तिवारी ने साल 2021-22 में शराब के थोक कारोबार का ठेका हासिल किया था। झारखंड के सबसे बड़े शराब कारोबारी योगेंद्र तिवारी ने अपने राजनीतिक और नौकरशाही में संबंधों के जरिए राज्य में शराब के थोक कारोबार में वर्चस्व



इडी ऑफिस जाते तिवारी ब्रदर्थ

प्राइवेट डिटैलिंग एजेंसी से मदद की सूचना

इडी के अधिकारियों को जानकारी मिली है कि योगेंद्र तिवारी द्वारा इडी के अफसरों की जासूसी भी करवाई जाती थी, साथ ही उनकी गतिविधियां पर नजर भी रखी जाती थी। इडी ने इससे भी जुड़े सवाल पूछे। योगेंद्र तिवारी बीते कई महीनों से इडी के अफसरों की जासूसी कर रहे थे। बकायदा इसके लिए प्राइवेट डिटैलिंग एजेंसी की भी मदद योगेंद्र तिवारी के द्वारा लिए जाने की सूचना इडी को मिली थी। बुधवार को योगेंद्र तिवारी से पूछताछ के दौरान अधिकारियों ने इस संबंध में भी जानकारी मांगी थी। जानकारी के मुताबिक, प्रेम प्रकाश के यहां हुए छापे के बाद ही योगेंद्र तिवारी इडी की रडार पर आ गये थे। तब से ही उनके द्वारा इडी के अफसरों की गतिविधि पर नजर रखी जाती थी। कई बार इडी के अफसरों के कहीं आने जाने की रेकर्ड भी करवाने की बात सामने आयी है।

स्थापित किया था। साल 2021 में सरकार की थोक शराब नीति लागू होने के बाद योगेंद्र तिवारी ने अपने सिंडिकेट के जरिए 19 जिलों में शराब के ठेकों पर वर्चस्व स्थापित किया था, तब उत्पाद विभाग को भेजे गए बैंक खातों से तब इस बात का खुलासा हुआ था।

अपहृत दोनों बच्चे मुक्त चार अपहर्ता गिरफ्तार

खबर मन्त्र ब्यूरो

कोडरमा। जिला पुलिस ने फिरोती के लिए अपहृत दो बच्चों को पांच घंटे के भीतर ही सकुशल बरामद कर लिया है। पुलिस ने कार्रवाई करते हुए चारों किडनैपर्स को भी गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। तिलैया थाना क्षेत्र में इन दोनों बच्चों का अपहरण परिजनों से फिरोती की मांग की थी। जानकारी मिलते ही पुलिस ने परिजनों के साथ मिल कर जाल बिछा कर बच्चों को सकुशल बरामद कर लिया। **आइसक्रीम फैक्ट्री में रखा था बच्चों को :** तिलैया थाना प्रभारी विनोद कुमार ने जानकारी देते हुए बताया कि दोनों बच्चों को 5 घंटे

वया है मामला : शुक्रवार को मादोईड के दो बच्चे जब काफी देर तक घर नहीं लौटे, तो उनके परिजनों को खोजने लगे। अंत में वे थक हर कर बच्चों की गुमशुदगी की शिकायत लेकर पहुंचे। इसके कुछ देर बाद ही लापता बच्चों के परिजनों के गोबाड़ल पर बच्चों को रिहा करने के एवज में 70 हजार रुपये फिरोती मांगी गयी। बच्चों के अपहरण की बात सामने आने पर परिजनों तिलैया थाना पहुंचे और पुलिस को मामले की जानकारी दी। परिजनों के साथ मिल पुलिस ने जाल बिछाया और उन्हें गिरफ्तार किया।

तक तिलैया थाना क्षेत्र के एक आइसक्रीम फैक्ट्री में कैद कर रखा गया था। पांच घंटे में पुलिस ने दोनों बच्चों को मुक्त करते हुए इसमें संलिप्त चारों अपहरणकर्ताओं को जेल भेज दिया।

दाहू यादव के भाई सुनील को इडी कोर्ट ने भेजा जेल

अवैध खनन मामला

रांची। साहिबगंज में एक हजार करोड़ रुपये के अवैध खनन से जुड़े मामले में शुक्रवार को गिरफ्तार सुनील यादव को शनिवार को पुलिस ने इडी कोर्ट में पेश किया गया। विशेष न्यायाधीश पीके शर्मा की कोर्ट में पेशी के बाद उसे न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया। इस मामले की जांच इडी मनी लान्डिंग के तहत कर रही है। दाहू यादव और सुनील यादव के खिलाफ इडी कोर्ट ने 10 महीने पहले



दाहू और सुनील पर हैं कई आरोप

दोनों भाइयों दाहू और सुनील यादव पर पंकज मिश्रा के साथ मिलकर अवैध खनन, अवैध परिवहन और साहिबगंज में गंगा नदी पर अवैध तरीके से जहाज परिवहन का आरोप है। दाहू यादव पर मेसर्स इंफ्रासिस्ट्रकचर प्राइवेट लिमिटेड का स्टीमर गलत तरीके से चलवाने का भी आरोप है। 23 मार्च 2022 को हुई दुर्घटना और अवैध स्टोन विस्फुटन के मामले में इडी ने इंफ्रासिस्ट्रकचर के स्टीमर को जब्त किया था, जिसे दाहू यादव और उसके भाई सुनील यादव की देखरेख में चलाया जाता था। दोनों भाइयों पर आरोप है कि वे स्टीमर के सहारे स्टोन विस्फुटन करनेवाले ट्रकों से पंकज मिश्रा के लिए 500 रुपये प्रति ट्रक की दर से वसूली करते थे। बच्चे यादव ने इडी को दिये गये अपने बयान में इस बात को स्वीकार किया था।

वारेट जारी किया था। दाहू भाई हैं। दाहू यादव अब भी यादव और सुनील यादव संगे फरार है। (शेष पेज 11 पर)

डुमरी उपचुनाव हमें गिराने के कई हथकंडे अपनाये



डुमरी में जनसभा के दौरान सीएम हेमंत सोरेन, बेबी देवी व अन्य।

झामुमो को दें : बोकारो के चंद्रपुरा प्रखंड स्थित तेलों में हेमंत सोरेन ने चुनावी सभा में एनडीए पर बड़ा हमला बोला है। उन्होंने आरोप लगाया है कि चूल्हा प्रमुख के नाम पर महिलाओं को लिफाफा दिया जा रहा है। उन्होंने एनडीए को बेईमान भी कहा। उन्होंने महिलाओं से अपील की है कि आप सभी लिफाफा जरूर लें, लेकिन वोट झामुमो प्रत्याशी को ही दें। क्योंकि एनडीए के बारे में जो बेईमानी का

सीएम हेमंत सोरेन एनडीए सरकार पर जम कर बरसे और आरोप लगाया कि चुनौती हुई उनकी सरकार को गिराने के लिए तरह-तरह के हथकंडे अपनाये जा रहे हैं। खरीद-फरोख्त, इडी-सीबीआइ, इनकम टैक्स का रेट तथा झूठा केस में फंसा कर विधायकों की सदस्यता खत्म करना जैसी ओछी राजनीति की जा रही है। जिस कारण सरकार चलाने में काफ़ी परेशानी हुई, लेकिन इससे धराने वाले नहीं हैं। सीएम ने कहा कि यह शहादत का चुनाव है। इसमें हम लेखा-जोखा देकर का काम नहीं करेंगे। लेखा-जोखा देकर का काम हम 2024 के चुनाव में करेंगे।

धन है, उसे इसी माध्यम से आप खत्म करें। सीएम के साथ मौजूद सभी मंत्रियों ने इस चुनाव को एक जनता की शहादत होने पर उपचुनाव होने की बात कही। (शेष पेज 11 पर)

एक वाहन से 10 लाख कैश बरामद

खबर मन्त्र संवाददाता

बोकारो। शनिवार को दोपहर पुलिस ने चंद्रपुरा-हरिणा सड़क मार्ग के तरंगा चेकनाका के पास एक वाहन से दस लाख रुपये बरामद किया। डुमरी विधानसभा उपचुनाव को अभी विशेष वाहन चेकिंग चल रहा है। अधिकारियों की टीम के अनुसार ये रुपये

पूछताछ कर रहे अधिकारी, कोई संतोषजनक जवाब नहीं, कैश जल्द

गया है। वाहन में रेलवे टेका कंपनी मेसर्स बाल मुकुंद झा के हिमांशु मिश्रा सवार थे। इधर, रकम के साथ पकड़े गये हिमांशु मिश्रा ने बताया कि वाहन से वह बोकारो से जैनामोड होते हुए गोमो जा रहा थे।

उन्होंने कहा कि कंपनी की गोमो से निचित्रपुर में रेलवे की चाहरदीवारी निर्माण का कार्य चल रहा है। इसके लिए पेंमेंट का भुगतान के लिए रुपये ले जा रहे थे। इसी क्रम में वाहन जांच की गयी। वाहन जांच अभियान में दंडाधिकारी स्वतंत्र प्रकाश गौतम, चंद्रपुरा रकम नहीं मिला है। इस कारण रुपये बरामद किये गये हैं। जिला स्तरीय जांच के बाद आगे की कार्रवाई होगी।

डुमरी उपचुनाव

नहीं दे सके संतोषजनक जवाब : सफेद रंग की बोलरो गाड़ी (जेच 17 बी-3744) से 10 लाख रुपये बरामद किया

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा जारी, कई बदलाव

साल में दो बार बोर्ड परीक्षा, विषय चुनने की स्वतंत्रता

एजेंसी
नयी दिल्ली। शिक्षा मंत्रालय ने स्कूली शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एनसीएफ) 2023 जारी कर दी है। एक बार जब संशोधित एनसीएफ अगले शैक्षणिक वर्ष में लागू हो जायेगी, तो कक्षा 9 और 10 में छत्र तीन भाषाओं का अध्ययन करेंगे। इसके अनुसार कक्षा 11 और 12 के छात्र-छात्राओं को दो भाषाओं का अध्ययन करना

होगा और इनमें से कम से कम एक भाषा भारतीय होगी। वहीं, अब बोर्ड परीक्षाएं साल में दो बार होंगी और छात्र-छात्राओं को इसमें सौंप्रेश्र्ठ अंक बरकरार रखने का विकल्प होगा। कक्षा 11वीं और 12वीं में विषयों का चयन कला, विज्ञान, वाणिज्य 'स्ट्रीम' तक सीमित नहीं रहेगा बल्कि छात्र-छात्राओं को अपनी पसंद का विषय चुनने की आजादी मिलेगी। यह भारतीय भाषाओं में



शिक्षण और सीखने को बढ़ावा देने और स्कूली शिक्षा में अधिक

तैयार होंगी नयी पाठ्य पुस्तकें

मंत्रालय के अधिकारियों के अनुसार (एनसीएफ) शिक्षा नीति के अनुसार नया पाठ्यचर्या ढांचा तैयार है और इसके आधार पर 2024 के शैक्षणिक सत्र के लिए पाठ्य पुस्तकें तैयार की जायेगी। इसमें कला भाषा है कि कला एवं विज्ञान, पाठ्यक्रम संबंधी या पाठ्येतर गतिविधियों तथा व्यवसायिक एवं अकादमिक विषयों के बीच कोई खर्र्म विभाजन रखा नहीं होना चाहिए। कक्षा 11वीं और 12वीं में विषयों का चयन कला, विज्ञान, वाणिज्य 'स्ट्रीम' तक सीमित नहीं रहेगा बल्कि छात्र-छात्राओं को अपनी पसंद का विषय चुनने की आजादी मिलेगी।

अंतर-अनुशासनमत्कता को संभव बनाने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के दृष्टिकोण के अनुरूप है। (शेष पेज 11 पर)

हार्ड और सॉफ्ट कोक को अब नहीं मिलेगी मंजूरी

धनवाद की स्थिति पर विचिंत है प्रदूषण नियंत्रण पार्षद

खबर मन्त्र संवाददाता
रांची। धनवाद में कोयला खनन और इसके कारोबार से जुड़ी इकाइयों के चलते वायु की गुणवत्ता (एयर क्वालिटी इंडेक्स) खराब हुई है। साथ ही इससे स्वास्थ्य संबंधी गंभीर चिंता भी पैदा हो गयी है। ऐसे में झारखंड राज्य प्रदूषण नियंत्रण पार्षद ने चिंता जतायी है। फैसला लिया है कि धनवाद में अब

किसी भी नये हार्ड और सॉफ्ट कोक इकाइयों को उसकी ओर से कंसेंट टू इस्टेब्लिश निर्गत नहीं किया जायेगा। यह आदेश एक अक्टूबर 2023 से लागू होगा। जब तक केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण पार्षद द्वारा निर्धारित मानकों के अनुसार एयर क्वालिटी इंडेक्स के स्वीकार्य लिमिट की स्थिति नहीं बनेगी, यह आदेश लागू रहेगा। प्रदूषण नियंत्रण पार्षद के सदस्य सचिव वार्ड के दास के स्तर से सूचना जारी की गयी है। (शेष पेज 11 पर)

गांव-पंचायत की चलती-फिरती बैंक हो गयी है बिजनेस कार्रस्पोडेंट सखी

ग्रामीणों को अब अपने चौखट पर ही मिल रही बैंकिंग सेवाएं

महिला सशक्तिकरण की मिसाल है चिंतामणी

पेंशन धारकों को मिल रहा सर्वाधिक लाभ

खबर मन्त्र व्यूटे

रांची। चिंतामणी देवी ने अपने गांव-पंचायत में एक गृहिणी के साथ-साथ एक कुशल बिजनेस कार्रस्पोडेंट सखी के रूप में पहचान बनाई है। रांची के बुडमू प्रखंड के कटंगदिरी गांव की चिंतामणी देवी को आज लोग बैंक वाली दीदी कहकर बुलाते हैं। अब कटंगदिरी गांव के ग्रामीणों को बैंक के



चक्कर नहीं लगाने पड़ते। उनका बैंक अब चिंतामणी बन चुकी है।

गांव-गांव में लोगों को बैंकिंग सेवा जैसे जमा-निकासी, समूह का ट्रांजेक्शन, खाता खोलना, पेंशन एवं बीमा सेवा कर रही है प्रदान

लाभार्थियों को घर बैठे मिल रहा पैसा

चिंतामणी की आत्मनिर्भरता की कहानी गुलाब-जल स्वयं सहायता समूह से जुड़ने के साथ शुरू हुई। इसके बाद चिंतामणी जेएसएलपीएस, ग्रामीण विकास विभाग से मिले सहयोग एवं प्रशिक्षण की बदौलत आज बैंक ऑफ इंडिया में बीसी सखी के रूप में कार्य करने लगी। अब वह गांव-गांव घूमकर लोगों को बैंकिंग सेवाएं यथा

जमा-निकासी, समूह का ट्रांजेक्शन, खाता खोलना, पेंशन एवं बीमा सेवाएं प्रदान कर रही है। इस कार्य से चिंतामणी ने जहां अपनी आजीविका सुनिश्चित की, वहीं बीसी सखी की सेवाओं से सबसे ज्यादा फायदा पेंशन धारकों को हुआ है। चाहे वह वृद्धावस्था पेंशन हो या दिव्यांग पेंशन। अब लाभार्थियों को उनका पैसा घर बैठे मिल रहा है।

बीमा के प्रति ग्रामीण जागरूक

चिंतामणी जैसी करीब 4 हजार 950 से ज्यादा झारखण्ड की ग्रामीण महिलाओं को जेएसएलपीएस की ओर से प्रशिक्षित कर बीसी सखी के रूप तैयार किया गया है, जो गांव-गांव, पंचायत-पंचायत बैंकिंग एवं बीमा सेवाएं पहुंचा रही हैं। बीसी सखी के वजह से अब ग्रामीणों में बैंकिंग एवं बीमा के प्रति जागरूकता बढ़ी है।

खबर एक नजर में

विष्णु अग्रवाल ने दायर की जमानत याचिका

रांची। लैंड स्केम के आरोपी विष्णु अग्रवाल ने अपने अधिवक्ता के माध्यम से रांची पीएमएलए की विशेष कोर्ट में अपनी जमानत के लिए याचिका दायर की है। याचिका में विष्णु अग्रवाल ने कहा है कि इस पूरे केस में उनकी कोई संलिप्तता नहीं है। वह पूरी तरह से निर्दोष हैं। इसलिए उन्हें जमानत पर रिहा किया जाना चाहिए। साथ ही उन्होंने अपने खराब स्वास्थ्य का हवाला देते हुए भी जमानत अर्जी मंजूर करने की गुहार लगाई है। विष्णु अग्रवाल लैंड स्केम केस में प्रमुख आरोपी हैं। ईडी ने उन्हें 31 जुलाई को गिरफ्तार किया था। इसी केस में पावर ब्रोककर के नाम से मशहूर प्रेम प्रकाश से भी ईडी पूछताछ कर चुकी है। फिलहाल विष्णु अग्रवाल का स्वास्थ्य खराब होने के कारण इन्हें रिमिस के कैदी वार्ड में इलाज के लिए भर्ती किया गया है।

डीएलओ बोकारो को अतिरिक्त प्रभार

रांची। राज्य सरकार ने झारखंड प्रशासनिक सेवा के अधिकारी जिला भू-अर्जन पदाधिकारी बोकारो द्वारिका पाठक को अपने कार्यों के साथ पेट्रोप्लियम एवं प्राकृतिक गैस विनियामक बोर्ड भारत सरकार द्वारा अधिकृत मेसर्स प्रभा एनर्जी प्राइवेट लिमिटेड के कार्य के लिए सक्षम प्राधिकार के रूप में अतिरिक्त प्रभार दिया है। इस संबंध में कार्मिक प्रशासनिक सुधार राजभाषा विभाग ने अधिसूचना जारी कर दी है।

केरल कैडर की आइएएस रिया आर्येगी झारखंड

रांची। झारखंड को जल्द ही एक नया आईएएस अफसर मिलेगा। केंद्र सरकार ने केरल कैडर की आइएएस अधिकारी रिया सिंह की सेवा झारखंड को सौंपी है। 2021 बैच की आइएएस अधिकारी ने अपने ही बैच के झारखंड कैडर के आइएएस अधिकारी सन्नी सिंह से विवाह किया है। केंद्र सरकार ने इसके आधार पर इनकी सेवा को झारखंड ट्रांसफर कर दिया है। केंद्रीय कार्मिक के नोटिफिकेशन के बाद झारखंड सरकार के कार्मिक विभाग इनकी पोस्टिंग करेगा।

कल ढाई घंटे देर से खुलेगी धनबाद-अल्लेपी

रांची। धनबाद-अल्लेपी एक्सप्रेस 28 अगस्त को ढाई घंटे के देर से खुलेगी। दक्षिण मध्य रेलवे में गुनाडाला-विजयवाड़ा के बीच तीसरी लाइन के लिए चल रहे कार्य के कारण दिनांक 28 अगस्त को गाड़ी संख्या-13351 धनबाद-अल्लेपी एक्सप्रेस के समय को पुनर्निर्धारण किया गया है। यह जानकारी शनिवार को वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक व मुख्य जनसंपर्क अधिकारी अमरेश कुमार ने दी।

हैदराबाद-रक्सौल स्पेशल ट्रेन को अवधि विस्तार

रांची। हैदराबाद-रक्सौल-सिकंदराबाद स्पेशल ट्रेन की परिचालन में अवधि विस्तार किया गया है। इस संबंध में रेलवे बोर्ड की ओर से सूचना जारी कर दी गयी है। रांची रेल मंडल की ओर से जानकारी दी गयी है कि यात्रियों की सुविधा को देखते हुए ट्रेन के परिचालन को अवधि विस्तार दिया गया है। ट्रेन संख्या 07051 हैदराबाद रक्सौल स्पेशल ट्रेन का परिचालन 2 सितंबर से 30 सितंबर तक किया जायेगा। ट्रेन संख्या 07052 रक्सौल सिकंदराबाद स्पेशल ट्रेन की यात्रा 5 सितंबर से 3 अक्टूबर तक परिचालन होगा। बता दें कि ट्रेन दरभंगा और बरौनी से होते हुए धनबाद और रांची से गुजरती है। ऐसे में धनबाद और रांची के यात्रियों को ट्रेन का परिचालन बढ़ने से लाभ होगा।

सहायक आचार्य नियुक्ति में आरक्षण के खिलाफ हाई कोर्ट में याचिका दायर

रांची। सहायक आचार्य नियुक्ति नियमावली में पारा शिक्षकों को 50 प्रतिशत आरक्षण दिए जाने को झारखंड हाई कोर्ट में चुनौती दी गई है। मामले को लेकर दायर बीआरपी एवं सीआरपी बहादुर महतो व अन्य की याचिका की सुनवाई करते हुए झारखंड हाईकोर्ट ने राज्य सरकार एवं झारखंड स्टूडेंट्स एसोसिएशन कमिशन (जेएसएससी) को नोटिस जारी कर जवाब मांगा है। मामले की सुनवाई हाई कोर्ट के चीफ जस्टिस संजय कुमार मिश्रा की अध्यक्षता वाली खंडपीठ में हुई। अगली सुनवाई 31 अगस्त को होगी। मामले में जेएसएससी को भी प्रतिवादी बनाया गया है। प्रार्थी की ओर से अधिवक्ता अमित कुमार तिवारी ने पैरवी की। उनकी ओर से कोर्ट को बताया गया कि सहायक आचार्य नियुक्ति नियमावली 2022 में सविदा पर शिक्षा विभाग में कार्यरत कर्मियों को 50 प्रतिशत आरक्षण की सुविधा दी गई थी। बाद में सविदा कर्मियों को आरक्षण समाप्त कर दिया गया और नियमावली को संशोधित किया। राज्य सरकार ने संशोधित सहायक आचार्य नियुक्ति नियमावली 2023 बनाई है, जिसके तहत अब केवल पारा शिक्षकों को ही सहायक आचार्य नियुक्ति में 50 प्रतिशत आरक्षण देने का प्रावधान है। शिक्षा विभाग में कार्यरत सविदा कर्मियों को भी आरक्षण मिलना चाहिए था।

डुमरी उपचुनाव को लेकर राजनीतिक सरगर्मी उफान पर, आजसू ने की चुनावी सभा

अबुआ राज को झारखंड मुक्ति मोर्चा ने

बबुआ राज बनाकर रख दिया : सुदेश

जेएमएम के 20 साल के शासन ने डुमरी में शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार की स्थिति को बर्बाद कर दिया

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। डुमरी उपचुनाव को लेकर राजनीतिक सरगर्मी उफान पर है। एनडीए की उम्मीदवार यशोदा देवी आजसू के चुनाव चिन्ह के साथ चुनाव मैदान में हैं। उनके पक्ष में भाजपा और आजसू के नेता लगातार जनसभा कर माहौल अपने पक्ष में करने का काम कर रहे हैं।

आजसू के केंद्रीय अध्यक्ष सुदेश कुमार महतो ने शनिवार को 9 जनसभा पार्टी उम्मीदवार के पक्ष में की और मतदाताओं के मन को भांपने का काम किया। चैनपुर में उमड़ी भीड़ को देखकर गदगद हुए श्री महतो ने राज्य की झामुमो नीत सरकार पर हमलवार होते हुए कहा

वैद्यनाथ राम और नारायण दास को विस आश्वासन समिति से हटाने की मांग

रांची। झारखंड आंदोलनकारी संघर्ष मोर्चा के संस्थापक एवं प्रधान सचिव पुष्कर महतो ने विधायक वैद्यनाथ राम और विधायक नारायण दास को झारखंड विधानसभा आश्वासन समिति के सदस्य पद से हटाने की मांग की है। उन्होंने शनिवार को प्रेस बयान जारी कर कहा कि वैद्यनाथ राम एवं नारायण दास झारखंड अलग राज्य के आंदोलनकारी के मान सम्मान पहचान नियोजन एवं पेंशन के मामले को लेकर गंभीर नहीं हैं। झारखंड आंदोलनकारी के सवाल को लेकर आश्वासन समिति की कई बैठकें अब तक हो चुकी हैं लेकिन वैद्यनाथ राम एवं नारायण दास अपने दायित्व का निर्वाह नहीं करते हैं। आश्वासन समिति की बैठकों में उपस्थित नहीं होते हैं जिससे झारखंड अलग राज्य के आंदोलनकारी के मामले लिंबित रह जाते हैं और झारखंड आंदोलनकारी के मान सम्मान, पेंशन, नियोजन एवं पहचान के मामले अंधर में लटक जाते हैं। इसलिए ऐसे विधायकों को आश्वासन समिति से हटा दिया जाना चाहिए।

डुमरी विधानसभा के लोगों का लालन-पालन यशोदा माता करेंगी



कि सरकार ने इस उपचुनाव को अपनी प्रतिष्ठा का सवाल बना लिया है। अब वह लड़ाई राजा और रंक के बीच की हो गई है लेकिन डुमरी की जनता ने हवाई यात्रा करने वाले को गांव की पगडंडी नापने को मजबूर कर दिया है।

झारखंड मुक्ति मोर्चा को घेरते हुए उन्होंने कहा कि इस पार्टी का चरित्र बदल चुका है, झामुमो ने

विनोद बाबू के विचारों को लिंजल देकर भय और भ्रष्टाचार की राजनीति को प्रश्रय देने का काम शुरू कर दिया है। अबुआ राज को झारखंड मुक्ति मोर्चा ने बबुआ राज बना दिया है।

जनसभा में उपस्थित भीड़ से सवाल करते हुए उन्होंने पूछा कि झूठे वादों के आधार पर आपका वोट पाने वाली इस सरकार ने बोला

था कि राज्य के युवाओं को हर साल 5 लाख रोजगार देंगे, पढ़े लिखे बेरोजगारों को 5 से 7 हजार बेरोजगारी भत्ता देने का काम करेंगे, तीन कमरों का आवास उपलब्ध करवाने का काम करेंगे। क्या ये वादे पूरे हुए हैं?

उन्होंने कहा पिछले 20 साल के शासन में शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार को लेकर कोई काम नहीं

हुआ है। जिन युवाओं को कलम और किताब पकड़ना था उनके हाथों में शराब की बोतलें देने का काम किया गया है। श्री महतो ने आवाज से आह्वान करते हुए कहा कि जिस राजनीति ने पिछले 20 वर्षों में भी आपका भाग्य बदलने का काम नहीं किया वैसी राजनीति को त्याग देना ही बेहतर है।

इनका इरादा विकास और सेवा करने का था ही नहीं, इन्होंने केवल राज किया है। अगर इरादा होता तो डुमरी की किस्मत बदल चुकी होती।

अब समय आ गया है भटकाव की राजनीति से बाहर निकला जाय। इन 20 वर्षों में पूरी बेक पीढ़ी जवान हो गई लेकिन डुमरी वहीं खड़ा है। उपचुनाव पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि यह उपचुनाव केवल एक विधायक को जिताने का नहीं है बल्कि चुनाव का परिणाम पूरे राज्य की किस्मत बदलने का काम करेगा। आम आदमी के वोट से जुड़े

सपने पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि गरीब एक मकसद के साथ वोट देता है। उस वोट के साथ उसके सपने और अरमान जुड़े होते हैं। वह यह सोचकर वोट करता है कि इससे उसकी मुश्किलें दूर होंगी लेकिन वोट के बाद उसके सपने टूट जाते हैं, लेकिन मैं विश्वास दिलाता हूँ, इस बार ऐसा नहीं होगा आपके अरमान दफन नहीं होंगे। यशोदा देवी डुमरी के सेवक के तौर पर काम करते हुए क्षेत्र को आगे ले जाने का काम करेंगी। डुमरी विधानसभा के लोगों का लालन-पालन यशोदा माता करेंगी।

सुदेश कुमार महतो ने आज पार्टी प्रत्याशी के पक्ष में लगातार 9 जनसभाओं को संबोधित किया। ये सभाएं डुमरी प्रखंड के चैनपुर, कल्हावार, चेगरी, चीनो, कुलगां उतरी और दक्षिणी, रंगमाटी, लक्ष्मण टुंडा और खैरा टुंडा में आयोजित हुईं।

एनआइए रांची शाखा ने नक्सलियों के शीर्ष लीडर प्रमोद मिश्रा से की पूछताछ

झारखंड में नक्सलियों की रणनीति के बारे में ली जानकारी

खबर मन्त्र व्यूटे

रांची। बिहार के गया जेल में बंद प्रतिबंधित नक्सली संगठन भाकपा माओवादी के शीर्ष लीडर प्रमोद मिश्रा और उसके सहयोगी अनिल यादव से रांची एनआइए की टीम ने पूछताछ की। पूछताछ में एनआइए की टीम ने झारखंड में नक्सलियों के ठोस रणनीति के बारे में पूछताछ की। प्रमोद मिश्रा को 72 घंटे तक रिमांड पर लिया गया है। प्रमोद मिश्रा पिछले पांच दशक से नक्सली संगठन से जुड़े और पोलित ब्यूरो सदस्यों में से एक हैं, जो बीते 9 अगस्त को गया में अपने एक सहयोगी के साथ गिरफ्तार हुआ था। इन राज्यों की पुलिस भी करेगी पूछताछ : पोलित ब्यूरो मेंबर प्रमोद मिश्रा से तेलंगाना, छत्तीसगढ़ और पश्चिम बंगाल की पुलिस भी प्रमोद

मिश्रा से पूछताछ करने गये पहुंचे हैं। गौरतलब हो कि प्रमोद मिश्रा का नक्सली आतंक देश के कई राज्यों में सक्रिय रहा है। ऐसे में कई राज्यों की पुलिस को उनकी तलाश थी। 9 अगस्त को हुई थी नक्सली की गिरफ्तारी : नक्सली संगठन भाकपा माओवादी में प्रमोद मिश्रा अपने आप में एक बड़ा नाम है। बीते 9 अगस्त को दिल्ली आईबी की इनपुट पर गया पुलिस और सुरक्षा बलों की टीम ने प्रमोद मिश्रा और उनके सहयोगी अनिल यादव की गिरफ्तार करने में सफल रही थी। यह गया पुलिस के लिए बड़ी सफलता थी। वहीं धीरे-धीरे कमजोर पड़ रहे नक्सलियों के लिए यह एक बड़े झटके के समान था। नक्सली लीडर प्रमोद मिश्रा संगठन को मजबूत करने के लिए बिहार-झारखंड में लगातार कम कर रहा था। गिरफ्तारी के ये दोनों गया जेल में बंद थे। प्रमोद मिश्रा बिहार के औरंगाबाद जिले के कोसमा के रहने वाला है।

22 पुलिसकर्मियों की जघन्य हत्या के आरोपी माओवादी नागेंद्र से पूछताछ

रांची। राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने माओवादी कमांडर नागेंद्र से पूछताछ की। एनआईए की रांची ब्रांच ने नागेंद्र को पांच दिनों की रिमांड पर लेकर पूछताछ की। मूल रूप से पलामू के पांकी के रहनेवाले नागेंद्र उरांव पर कई बड़ी घटनाओं का आरोप है। गौरतलब हो कि अलग-अलग नक्सली घटनाओं में 22 पुलिसकर्मी शहीद हो गये थे। नागेंद्र उरांव में लातेहार पुलिस ने छह जून को गिरफ्तार किया था। गुरिल्ला दस्ता का कमांडर था नागेंद्र : नागेंद्र उरांव माओवादियों के गुरिल्ला दस्ता का कमांडर था। पिछले कई वर्षों से वह माओवादियों के मारक दस्ते का भी प्रमुख रहा था। वर्ष 2013 कटिया में जिस माओवादी हमले में 12 जवानों की मौत हुई थी। उस हमले में भी नागेंद्र उरांव भी दस्ते में शामिल था। हमले के बाद माओवादियों ने शहीद पुलिस जवानों के शरीर में आईडी लगाया था। इसके अतिरिक्त वर्ष 2018 में माओवादी दस्ते ने खपरी महड़ा में पुलिस की टीम पर हमला किया था। जिसमें 6 जवान शहीद हुए थे। इस हमले में भी नागेंद्र ने मुख्य भूमिका थी। वर्ष 2019 में माओवादियों ने चंद्रवा थाना क्षेत्र में हमला किया था। जिसमें चार जवान शहीद हो गये थे।

दो नक्सली गिरफ्तार भेजे गए जेल

झारखंड जगुआर के सब इंस्पेक्टर अमित तिवारी समेत दो पुलिस जवानों की हत्या में थे शामिल

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। भाकपा माओवादी नक्सली द्वारा स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर पुलिस पर घात लगाकर हमला कर झारखंड जगुआर के सब इंस्पेक्टर अमित तिवारी समेत दो पुलिस जवानों की जान लेने की घटना में शामिल दो नक्सलियों को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। जिले के एसपी आशुतोष शंखर ने शनिवार को एक संवाददाता सम्मेलन में जानकारी देते हुए बताया कि इस कांड के अभियुक्तों के अपने गांव आने की सूचना पर 25 अगस्त को टोंटो थाना क्षेत्र के तुम्बाहाका के आस-पास छापामारी एवं आवश्यक कार्रवाई हेतु गठित विशेष छापामारी टीम ने दो सदस्य लोंगो रामजा हेमब्रम और पाण्डु पुर्ति को गिरफ्तार किया गया। एसपी ने बताया कि पाण्डु पुरती का भाई भी माओवादी नक्सली दस्ते का सदस्य है। इस कांड सॉलिट अन्य अभियुक्तों के विरुद्ध छापामारी की जा रही है।

छापामारी दल में यह थे शामिल

पुलिस निरीक्षक, झोंकपानी अंचल, थाना प्रभारी, टोंटो थाना, सी०आर०पी०एफ-197 बटालियन के सशस्त्र बल, झारखण्ड जगुआर ए0जी0-37 के सशस्त्र बल और चाईबासा जिला बल के जवान शामिल थे।

राज्य में सभी जिलों चलाता था कंपनी, बैंक एकाउंट निकला संथाल का

सिंडिकेट के किंगपिन योगेंद्र तिवारी, पुरानी शराब नीति बनी छापेमारी की वजह, संथाल का था कब्जा

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। राज्य में चल रही पुरानी शराब नीति पर कब्जा संथाल परगना के सिंडिकेट का है। सिंडिकेट के किंगपिन योगेंद्र तिवारी थे। राज्य के 24 जिलों में से 19 जिलों में शराब के थोक कारोबार का काम गोड्डा, जामताड़ा और दुमका के व्यापारी के द्वार किया जा रहा है। इंडी जांच में आये कारोबारियों की लिस्ट और उनके बैंक डिटेल्स सामने आने से यह साफ हुआ कि शराब के थोक व्यापार पर संथाल का कब्जा था। सभी व्यापारियों के बैंक अकाउंट संथाल के : ज्यादातर कारोबारियों ने जो बैंक डिटेल्स

किस जिले में किसे मिला शराब के थोक कारोबार का जिम्मा

जिला	कंपनी	पता	बैंक का पता
रांची	कल्याणेश्वरी इंटरप्राइज	धनबाद	जामताड़ा
कोडरमा	आनंद ट्रेडर	जामताड़ा	मिहिजाम
सरायकेल	जमाली इंटरप्राइज	गोड्डा	जामताड़ा
खुंटी	नुमरी इंटरप्राइज	दुमका	दुमका
नुगला	जमाली इंटरप्राइज	जामताड़ा	जामताड़ा
बनार	रघुविक इंटरप्राइज	जामताड़ा	मिहिजाम
लातेहार	रघुविक इंटरप्राइज	जामताड़ा	मिहिजाम
प सिंहभूम	विश्वा इंटरप्राइज	गोड्डा	जामताड़ा
पलामू	विश्वा इंटरप्राइज	गोड्डा	जामताड़ा
धनबाद	बंभनाथ इंटरप्राइज	जामताड़ा	जामताड़ा
बोकारो	नुता ट्रेडर	दुमका	मिहिजाम
दुमका	मैन्हर डेवलपर्स	रांची	मिहिजाम

डिपार्टमेंट को दिये हैं, वो संथाल परगना के बैंकों के थे। झारखंड में 24 जिले में 19

जिलों में शराब के थोक व्यापार का जिम्मा गोड्डा, जामताड़ा और दुमका के कारोबारियों को मिला

था, अन्य पांच जिलों में धनबाद और रांची से जुड़े व्यवसायियों को यह जिम्मा मिला था, लेकिन सभी

24 जिलों में काम करने वाले कारोबारियों का संबंध संथाल परगना से ही था।

नजदीकी पलाश मार्ट जाकर करें राखी की खरीदारी : मुख्यमंत्री



रांची। राज्य के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने शनिवार को कहा कि आने वाले रक्षाबंधन त्योहार के लिए राखी मंडल से जुड़ी राज्य की हमारी मातायें-बहनें स्नेहपूर्वक राखियों का निर्माण कर रही हैं। आप सभी से आग्रह है कि अपने नजदीकी पलाश मार्ट में जाकर स्नेह और आशीर्वाद से भरी इन राखियों को खरीद कर हमारी मेहनकश माताओं-बहनों का उत्साहवर्द्धन अवश्य करें। मुख्यमंत्री ने अपने ट्वीट पर ट्वीट कर सभी से पलाश मार्ट जाकर राखी खरीदने का आग्रह किया है।

सदस्यता अभियान की दी गयी जिम्मेदारी संगठन को मजबूत करने की कवायद में जुटा युवा राजद

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। युवा राष्ट्रीय जनता दल झारखंड में संगठन को मजबूत बनाने की कवायद में जुट गया है। इसी कड़ी में युवा राजद के प्रदेश अध्यक्ष रंजन कुमार ने प्रदेश के पदाधिकारियों को निर्देश दिया है कि वे पार्टी कार्यालय में उपस्थित होकर संगठन को मजबूत करते हुए सदस्यता अभियान को सफल बनाने में अपना सहयोग दें।

इन्हें दी गयी है जिम्मेदारी

रविवार : डॉ अचिनाश कुमार प्रदेश उपाध्यक्ष, राम सिंह प्रदेश महासचिव, अजय कुमार प्रदेश सचिव, उज्जवल कुमार सिंह प्रदेश महासचिव। सोमवार : मो जफिर खान प्रदेश उपाध्यक्ष, चिक्की यादव प्रदेश महासचिव, मो फरहान खान प्रदेश सचिव, मो गुलजार अंसारी जिला अध्यक्ष रांची।



मंगलवार : मो शोकत अंसारी प्रदेश उपाध्यक्ष, धर्मेन्द्र सिंह और संतोष कुमार प्रदेश महासचिव बुधवार : शहनाज खातून प्रदेश उपाध्यक्ष, मंतोष यादव प्रदेश महासचिव, मो अरशद अंसारी प्रदेश सचिव। गुरुवार : मो मोइन अंसारी और गायत्री देवी प्रदेश महासचिव, लाल बाबू रजक प्रदेश सचिव। शक्रवार : क्षितिज मिश्रा प्रदेश महासचिव सह प्रवक्ता, राजकुमार और प्रशांत कुमार प्रदेश सचिव। शनिवार : राजेश यादव रांची महानगर अध्यक्ष, ऑपेश सिंह यादव, उर्मिला सोरेन, ममता कुजूर प्रदेश महासचिव।



समय

संवाद

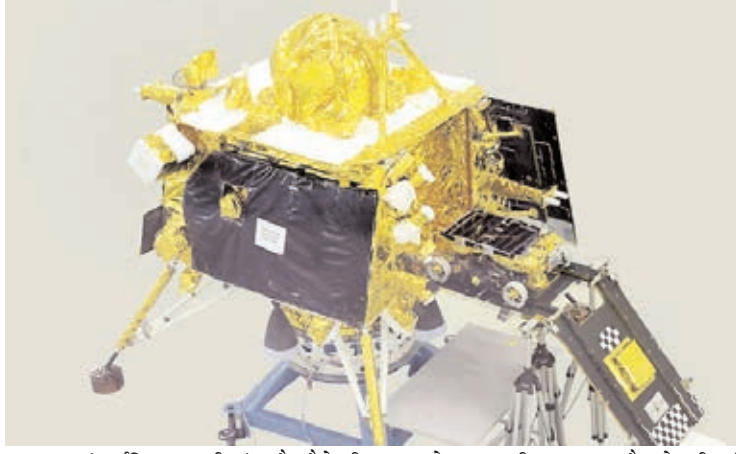
चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर आप खड़े हों, तो आपको सूर्य क्षितिज रेखा पर दिखाई देगा। चंद्रयान-1 चंद्रमा पर पानी की खोज पहले ही कर चुका है। नासा के अनुसार हाइड्रोजन की मौजूदगी यहां बर्फ होने का सबूत हो सकता है। 14 दिन इसलिए क्योंकि चंद्रमा का एक दिन पृथ्वी के 14 दिन के बराबर होता है। जब तक इस इलाके में धूप रहेगी, तापमान 50 डिग्री के आसपास रहेगा, पर जैसे ही अंधेरा होगा, तापमान माइनस 180 या उससे भी कम जाएगा। ऐसे में लैंडर और रोवर के इलेक्ट्रॉनिक उपकरण काम करेंगे या नहीं, कहना मुश्किल है।

अरबों साल पुराना अंधेरा मिटायेगा चंद्रयान तीन

प्रमोद जोशी

केवल चंद्रमा तक जाने में जितनी बड़ी चुनौती थी, उससे बड़ी चुनौती थी, कुछ नया करने की, ताकि इतिहास में नाम लिखा जाए। चंद्रयान-1 में लगे स्पेक्ट्रोमीटर ने चंद्रमा में पानी के कणों की पुष्टि की थी। वह एक उपलब्धि थी। चंद्रयान-3 चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के काफी करीब उतरा है। वैज्ञानिक अध्ययन के लिहाज से यह महत्वपूर्ण क्षेत्र है। यहाँ ऊँचे पहाड़ और कई बड़े-बड़े क्रैटर हैं। बहुत से ऐसे क्रैटर हैं या पहाड़ों की छाया के कारण ऐसे क्षेत्र हैं, जहाँ अरबों साल से सूरज की रोशनी नहीं पहुँची है। अरबों वर्ष का यह अंधेरा अध्ययन का रोचक विषय है। इससे सौरमंडल की संरचना के बारे में नई बातें पता लगेंगी।

दक्षिणी ध्रुव के अंधेरे इलाकों में अरबों वर्ष पुराना पानी या बर्फ होगी। पानी और बर्फ के अलावा कुछ ऐसे खनिज या तत्व भी हो सकते हैं, जिनके बारे में हम कुछ नहीं जानते हैं। वैज्ञानिक अध्ययन के लिए यह महत्वपूर्ण क्षेत्र है। दक्षिणी ध्रुव के कुछ इलाके अंधेरे में डूबे रहते हैं, जबकि कुछ इलाकों में सूर्य की पर्याप्त रोशनी रहती है। जैसे पृथ्वी के दक्षिणी



ध्रुव पर अंटार्कटिका काफी ठंडा है, वैसे ही यह चांद का सबसे ठंडा इलाका है। इस इलाके की जानकारी पृथ्वी के वैज्ञानिकों को ज्यादा नहीं है। भारत ने इसी चुनौती को देखते हुए इस इलाके को चुना है।

चंद्रमा पर तापमान में काफी ऊँच-नीच है। जिन हिस्सों में सूरज की रोशनी आती है, वहाँ तापमान 54 डिग्री सेल्सियस तक पहुँच जाता है। जिन हिस्सों में सूरज की किरणें नहीं आती हैं, वहाँ तापमान माइनस 248 डिग्री सेल्सियस तक भी पहुँच जाता है। चंद्रयान-3 दक्षिणी

ध्रुव से कुछ दूरी पर उतरा है। रोशनी की उपलब्धता, संचार और नेवीगेशन की दृष्टि से भी इस इलाके को लैंडिंग के लिए उपयुक्त माना गया।

पृथ्वी के दक्षिणी ध्रुव की ही तरह यहाँ सूर्य की किरणें तिरछी पड़ती हैं और तापमान काफी कम होता है। चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर आप खड़े हों, तो आपको सूर्य क्षितिज रेखा पर दिखाई देगा। यहाँ सूरज की रोशनी भी बहुत कम पड़ती है। तापमान कम होने के कारण यहां बर्फ काट हो सकती है। चंद्रयान-1

चंद्रमा पर पानी की खोज पहले ही कर चुका है। नासा के अनुसार हाइड्रोजन की मौजूदगी यहां बर्फ होने का सबूत हो सकता है।

14 दिन के बाद क्या?

चंद्रयान-3 से केवल 14 दिन तक काम करने की उम्मीद की गई है। 14 दिन इसलिए क्योंकि चंद्रमा का एक दिन पृथ्वी के 14 दिन के बराबर होता है। जब तक इस इलाके में धूप रहेगी, तापमान 50 डिग्री के आसपास रहेगा, पर जैसे ही अंधेरा होगा, तापमान माइनस 180 या उससे भी कम जाएगा। ऐसे में लैंडर और रोवर के इलेक्ट्रॉनिक उपकरण काम करेंगे या नहीं, कहना मुश्किल है। रूस ने जो अभियान भेजा था, उसमें अतिरिक्त ईंधन की व्यवस्था की गई थी, ताकि उसका तापमान बना रहे, पर चंद्रयान में ऐसी व्यवस्था नहीं है। लूना-25 की योजना साल भर तक काम करने की थी। चंद्रयान-3 की योजना 14 दिन की है। अलबत्ता यह देखना होगा कि 14 दिन बाद फिर से धूप आने पर चंद्रयान के उपकरण काम करेंगे या नहीं। इसरो के अध्यक्ष एस सोमनाथ का कहना है कि संभव है कि वे फिर से काम करने लेंगे। या इस दौरान भी काम करें। फिलहाल अगले दो हफ्ते काफी रोचक होने वाले हैं।



अतुल मलिकराम

(राजनीतिक रणनीतिकार)

बचपन में दादी-नानी से यह कविता सुनकर ही हम सब बड़े हुए हैं चंदा मामा दूर के, पुपु पकाये बूर के.. लेकिन अब चंदा मामा दूर के कहां रहे हैं? अब तो उनके घर हमारा आना-जाना शुरू हो गया है। एक सबसे बड़ा सवाल महिलाओं के बीच जो हाल ही में उठकर आया है, वह यह है कि चांद पर जाने के बाद हम करवा चौथ कैसे मनायेंगे? फिर सोशल मीडिया पर एक और जोक देख रहा हूँ कि दुनिया की किसी भी महिला का चेहरा चाँद से नहीं मिलता..

खैर, यह तो हुई हंसी-गुदगुदी की बात, लेकिन सच तो यह है कि सदियों से बेतहाशा तकती चक्री की नजरों को अब जाकर राहत मिली है। उसका चांद तो धरती पर नहीं आया, लेकिन हम चाँद पर पहुंच गये..

जैसा कि महान कवि हरिवंशराय बच्चन जी ने अपनी कविता के माध्यम से कहा:

लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती,

कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती..

आज ये पंक्तियां देश की असीम विजय का शंखनाद करने का जरिया बन चुकी हैं।

इसमें कोई दो मत नहीं है कि वर्ष 2019 में चंद्रयान 2 मिशन के दौरान हमारे हाथ निराशा लगी थी और चांद से महज दो किलोमीटर की दूरी पर विक्रम से हमारा संपर्क टूट गया था। उस समय भारत के हर एक वैज्ञानिक और जनता का मन चीख-चीख कर एक ही बात कह रहा था कि सिर्फ संपर्क टूटा है, देश के सपने नहीं...

चंद्रयान 3 का चंद्रमा पर उतरना किसी स्वप्न से कम नहीं। इस वक्त स्पेसक्राफ्ट की लॉन्चिंग के लिए इस्तेमाल होने वाला सामान बेलगाड़ी की मदद से भी पहुंचाया जाता था। अंतरिक्ष में उड़ान भरने की दौड़ में भारत बेशक अन्य देशों की तुलना में बहुत देर से शामिल हुआ है, लेकिन बेहद सीमित संसाधनों के साथ यह दौड़ा बहुत आगे तक है, जिसकी मिसाल आज दुनिया के सामने है। भारत अब अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में दुनिया के कई देशों की मदद कर रहा है। 15 फरवरी, 2017 को इसरो ने 104 सैटेलाइट्स एक साथ लॉन्च किए, जो आज तक विश्व रिकॉर्ड है। इनमें से ज्यादातर सैटेलाइट्स दूसरे देशों के थे।

यह स्पष्ट है कि अभी तो हमने उड़ान भरी ही है। अभी हमें बहुत आगे जाना है। हम थके नहीं.. हम रुकेंगे नहीं.. यह सफलता एक व्यक्ति की नहीं है, बल्कि यह पूरी टीम के अथक प्रयासों का नतीजा है। वूँ ही नहीं भारत को अनेकता में एकता की शक्ति का परिचायक कहा जाता है। यह इसरो टीम ने साबित कर दिखाया। भविष्य में और भी सफल प्रोजेक्ट्स के साथ भारत को बहुत-बहुत बधाई एवं शुभकामनाएं और इसरो को दिल की गहराइयों से सलाम...।

हल्दीघाटी के बाद अगले 10 साल में मेवाड़ में क्या हुआ..

सुधांशु कुमार

इतिहास से जो पन्ने हटा दिए गए हैं उन्हें वापस संकलित करना ही होगा क्योंकि वही हिन्दू रेजिस्टेंस और शौर्य के प्रतीक हैं।

इतिहास में तो ये भी नहीं पढ़ाया गया है कि हल्दीघाटी युद्ध में जब महाराणा प्रताप ने कुंवर मानसिंह के हाथी पर जब प्रहार किया तो शाही फौज पांच छह कोस दूर तक भाग गई थी और अकबर के आने की अफवाह से पुनः युद्ध में सम्मिलित हुई है वाक्या अखिल फजल की पुस्तक अकबरनामा में दर्ज है.. वास्तविकता में हल्दीघाटी का युद्ध , महाराणा प्रताप और मुगलों के बीच हुए कई युद्धों की शुरुआत भर था। मुगल न तो प्रताप को पकड़ सके और न ही मेवाड़ पर अधिपत्य जमा सके। हल्दीघाटी के बाद क्या हुआ वो हम बताते हैं।

हल्दी घाटी के युद्ध के बाद महाराणा के पास सिर्फ 7000 सैनिक ही बचे थे।।।और कुछ ही समय में मुगलों का कुम्भलगढ़, गोंदुआ , उदयपुर और आसपास के ठिकानों पर अधिकार हो गया था। उस स्थिति में महाराणा ने गुरिल्ला युद्ध की योजना बनायीं और मुगलों को कभी भी मेवाड़ में सेटल नहीं होने दिया। महाराणा के शौर्य से

विचलित अकबर ने उनको दबाने के लिए 1576 में हुए हल्दीघाटी के बाद भी हर साल 1577 से 1582 के बीच एक एक लाख के सैन्यबल भेजे जो कि महाराणा को झुकाने में नाकामयाब रहे।

हल्दीघाटी युद्ध के पश्चात महाराणा प्रताप के खजांची भामाशाह और उनके भाई ताराचंद मालवा से दंड के पच्चीस लाख रुपये और दो हजार अशफिया लेकर हाजिर हुए। इस घटना के बाद महाराणा प्रताप ने भामाशाह का बहुत सम्मान किया और दिवेर पर हमले की योजना बनाई। भामाशाह ने जितना धन महाराणा को राज्य की सेवा के लिए दिया उस से 25 हजार सैनिकों को 12 साल तक रसद दी जा सकती थी। बस फिर क्या था।।।महाराणा ने फिर से अपनी सेना संगठित करनी शुरू की और कुछ ही समय में 40000 लड़ाकों की एक शक्तिशाली सेना तैयार हो गयी।

उसके बाद शुरू हुआ हल्दीघाटी युद्ध का दूसरा भाग जिसको इतिहास से एक षट्यंत्र के तहत या तो हटा दिया गया है या एकदम दरकिनार कर दिया गया है। इसे बैटल ऑफ दिवेर कहा गया गया है।

बात सन १५८२ की है, विजयदशमी का दिन था और महाराणा ने अपनी नयी संगठित सेना के साथ मेवाड़ को वापस स्वतंत्र करने



का प्रण लिया। उसके बाद सेना को दो हिस्सों में विभाजित करके युद्ध का बिगुल फूंक दिया।।।एक टुकड़ी की कमान स्वयं महाराणा के हाथ थी दूसरी टुकड़ी का नेतृत्व उनके पुत्र अमर सिंह कर रहे थे।

कर्नल टॉड ने भी अपनी किताब में हल्दीघाटी को दिवेर के युद्ध को राजस्थान का भौराथन बताया है।।। ये वही घटनाक्रम हैं जिनके इर्द गिर्द आप फिल्म 300 देख चुके हैं। कर्नल टॉड ने भी महाराणा और उनकी सेना के शौर्य, तेज और देश के प्रति उनके अभिमान को स्पार्टंस के तुल्य ही बताया है जो युद्ध भूमि में अपने से 4 गुना बड़ी सेना से वूँ ही टकरा जाते थे।

दिवेर का युद्ध बड़ा भीषण था, महाराणा प्रताप की सेना ने महाराजकुमार अमर सिंह के नेतृत्व में दिवेर थाने पर हमला किया ,

हजारों की संख्या में मुगल, राजपूती तलवारो बरखे भालो और कटारो से बाँध दिए गए।

युद्ध में महाराजकुमार अमरसिंह ने सुलतान खान मुगल को बरखा मारा जो सुलतान खान और उसके घोड़े को काटता हुआ निकल गया।उसी युद्ध में एक अन्य राजपूत की तलवार एक हाथी पर लगी और उसका पैर काट कर निकल गई।

महाराणा प्रताप ने बहलोलखान मुगल के सर पर वार किया और तलवार से उसे घोड़े समेत काट दिया। शौर्य की ये बानगी इतिहास में कहीं देखने को नहीं मिलती है। उसके बाद यह कहावत बनी की मेवाड़ में सवार को एक ही वार में घोड़े समेत काट दिया जाता है।ये घटनाये मुगलो को भयभीत करने के लिए बहुत थी। बचे खूबे 3600 मुगल सैनिकों ने महाराणा के सामने आत्म समर्पण किया।

दिवेर के युद्ध ने मुगलो का मनोबल इस तरह तोड़ दिया की जिसके परिणाम स्वरुप मुगलों को मेवाड़ में नार्याँ अपनी सारी 36 हथौतों, ठिकानों को छोड़ के भागना पड़ा, यहाँ तक की जब मुगल कुम्भलगढ़ का किला तक रातो रात खाली कर भाग गए।

चित्तौड़ को छोड़ के मेवाड़ के सारे ठिकाने/दुर्ग वापस स्वतंत्र करा लिए।

अधिकांश मेवाड़ को पुनः कब्जाने के बाद महाराणा प्रताप ने आदेश निकाला की अगर कोई एक बिस्वा जमीन भी खेती करके मुसलमानो को हासिल (टेक्स) देगा , उसका सर काट दिया जायेगा।।।इसके बाद मेवाड़ और आस पास के बचे खूबे शाही ठिकानो पर रसद पूरी सुरक्षा के साथ अजमेर से मगाई जाती थी। दिवेर का युद्ध ने केवल महाराणा प्रताप बल्कि मुगलो के इतिहास में भी बहुत निर्णायक रहा। मुझे भर राजपूतो ने पुरे भारतीय उपमहादीप पर राज करने वाले मुगलो के हृदय में भय भर दिया। दिवेर के युद्ध ने मेवाड़ में अकबर को विजय के सिलसिले पर न सिर्फ विराम लगा दिया बल्कि मुगलो में ऐसे भय का संचार कर दिया की अकबर के समय में मेवाड़ पर बड़े आक्रमण लगभग बंद हो गए।

इस घटना से क्रोधित अकबर ने हर साल लाखों सैनिकों के सैन्य बल अलग अलग सेनापतियों के नेतृत्व में मेवाड़ भेजने जारी रखे लेकिन उसे कोई सफलता नहीं मिली। अकबर खुद 6 महीने मेवाड़ पर चढ़ाई करने के मकसद से मेवाड़ के आस पास डेरा डाले रहा लेकिन ये महाराणा द्वारा बहलोल खान को उसके घोड़े समेत आधा चीर देने के ही डर था कि वो सीधे तौर पे कभी मेवाड़ पे चढ़ाई करने नहीं आया।

नाखूनो को बनाये खूबसूरत

आप जानते हैं कि अगर आपको नेचुरल तरीके से खूबसूरती न मिले तो बाहर की खूबसूरती ज्यादा देर नहीं टिकती है। चेहरे के साथ-साथ हम अपने नाखूनो में भी अधिक ध्यान देते हैं। जिससे कि वह भी खूबसूरत और मजबूत रहे, लेकिन कई कारणों के कारण वह ज्यादा टिक नहीं पाते हैं। आमतौर में पैरों की उंगलियों के नाखून के मुकाबले हाथ की उंगलियों के नाखून जल्दी बढ़ते हैं। अगर आपके नाखूनो में किसी तरह की समस्या है, तो वे बढ़ नहीं पाते। इसका मुख्य कारण ठीक ढंग से खाना नहीं खाना, पोषक तत्वों, विटामिन की कमी के कारण हो सकता है।।।अगर आप चाहते हैं कि आपके नाखून भी खूबसूरत, मजबूत और चमकदार हो तो आप किचन में मौजूद कुछ चीजें ये काम कर सकती हैं।

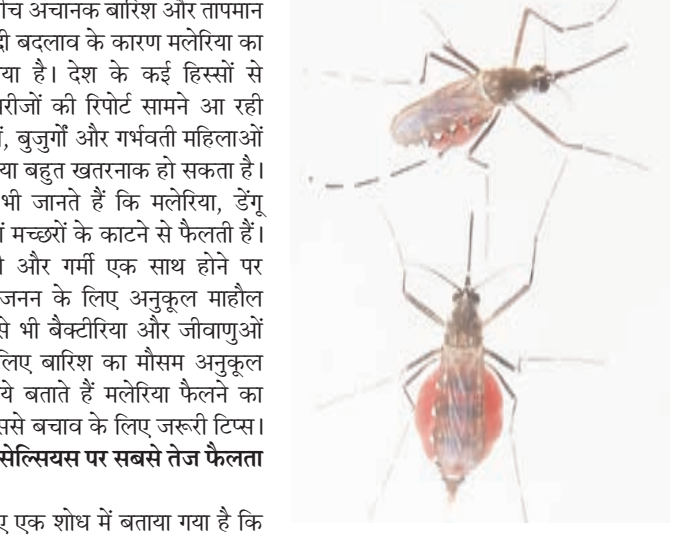
नींबू
यह विटामिन सी के गुणों से भरपूर होता है। यह आपके नाखूनो के लिए काफी फायदेमंद है। इसके इस्तेमाल से आपके नाखूनो की लंबाई बढ़ने के साथ-साथ चमक और मजबूती आती है। इसे इस्तेमाल करने के लिए एक बाउल में एक चम्मच नींबू का रस, कुछ बूंद जैतून के तेल में अच्छी तरह मिलाकर नाखूनो की मालिश करें।

तेज गर्मी के बीच अचानक बारिश और तापमान में जल्दी-जल्दी बदलाव के कारण मलेरिया का खतरा बढ़ गया है। देश के कई हिस्सों से मलेरिया के मरीजों की रिपोर्ट सामने आ रही हैं। छोटे बच्चों, बुजुर्गों और गर्भवती महिलाओं के लिए मलेरिया बहुत खतरनाक हो सकता है। यह तो आप भी जानते हैं कि मलेरिया, डेंगू जैसी बीमारियां मच्छरों के काटने से फैलती हैं। मौसम में नमी और गर्मी एक साथ होने पर मच्छरों को प्रजनन के लिए अनुकूल माहौल मिलता है। वैसे भी बैक्टिरिया और जीवाणुओं के पलने के लिए बारिश का मौसम अनुकूल होता है। आइये बताते हैं मलेरिया फैलने का कारण और इससे बचाव के लिए जरूरी टिप्स।

27 डिग्री सेल्सियस पर सबसे तेज फैलता है मलेरिया
हाल में हुए एक शोध में बताया गया है कि आमतौर पर मच्छर जनित रोगों का खतरा 27 डिग्री सेल्सियस के आसपास तापमान होने पर बढ़ जाता है, इसलिए जिन इलाकों में 25-30 डिग्री सेल्सियस तापमान है, वहां मलेरिया फैलने का ज्यादा खतरा होता है। इसके अलावा बारिश के मौसम में जगह-जगह जमा होने वाला पानी में मच्छर तेजी से प्रजनन करते हैं और आसपास के इलाकों में मलेरिया, डेंगू फैलने का कारण बनते हैं।

मलेरिया के लक्षण

इस मौसम में मलेरिया से बचें



सिद्धार्थ नगर के चिकित्साधिकारी डॉ. राम आशीष बताते हैं कि आजकल ओपीडी में रोजाना 30-40 मरीज ऐसे आते हैं जो बुखार से पीड़ित होते हैं। इमें से कई मरीज मलेरिया टेस्ट में पॉजिटिव पाए गए हैं। आमतौर पर मलेरिया होने पर बुखार आता है और शरीर में कंपकंपी होती है। डॉ. आशीष के अनुसार मलेरिया से सबसे ज्यादा बच्चे प्रभावित होते हैं। आजकल इमरजेन्सी वार्ड में रोजाना मलेरिया से प्रभावित 8-10 बच्चे भर्ती हो रहे हैं।

टायफाइड और वायरल बुखार का खतरा

डॉ. राम आशीष के अनुसार इस मौसम में टायफाइड और वायरल बुखार के मामले बहुत ज्यादा बढ़ जाते हैं। इसका कारण यह है कि बारिश के बाद सड़कों और जगह-जगह गंदगी बढ़ जाती है। शहरों के किनारे बसी जगहों पर जमा पानी के कारण मच्छर पनपते हैं, तो गांवों और जंगलों के आसपास के इलाकों में भी डेंगू-मलेरिया का प्रकोप बढ़ने लगता है।

मलेरिया से बचाव के लिए क्या करें?
डॉ. आशीष के अनुसार साफ-सफाई ही मलेरिया से बचाव का एकमात्र उपाय है।

अपने घर के आसपास साफ-सफाई रखें और पानी न जमा होने दें। गंदगी से मच्छर बढ़ेंगे और फिर मच्छरों से फैलने वाली बीमारियां बढ़ेंगी।

रात में सोते समय मच्छरों से बचने के लिए मच्छरदानी या कांडिल, मस्कीटो रिपेलेंट का प्रयोग करें।

खाने से पहले खुद भी साबुन से धोएं और बच्चों के हाथ भी धुलवाएं।

बारिश के मौसम में भीगे और नम कपड़े देर तक न पहनें।
खुले में बिकने वाली चीजें, बासी खाना आदि न खाएं।

कुंडली में चंद्र, चंद्रमा पर कुंडली भारी

राकेश सोहन

राजनीतिक गठबंधन में विचारधारा आड़े आती है और वैवाहिक गठबंधन में विचार ! दोनों का तोड़ पैसा है। पैसा चल जाए तो गठबंधन हो जाते हैं, दहेज मिल जाए तो विवाह ! इन गठबंधनों के टिकने की गारंटी तब भी नहीं है। राजनीतिक गठबंधन कुर्सी की होड़ में टूटते हैं और वैवाहिक गठबंधन, धनलोलुप मानसिकता में बिखर जाते हैं। वैवाहिक गठबंधन के पूर्व कुंडलियों का मिलान एक प्रचलित-पारंपरिक उपाय है। हालांकि गारंटी इसमें भी नहीं है।

उनकी शादी उन दिनों हुई जब चट मंगनी पट ब्याह का चलन शुरूआती दौर में था। उन्होंने लड़की देखी और हां कर दी। पण्डित जी ने दोनों की कुंडली देखकर सताईस गुणों का मिलान कर दिया। सफल वैवाहिक जीवन की गारंटी देकर दोनों परिवारों को खुश कर



दिया। हंसी-खुशी चट मंगनी करवा दी और फिर धूमधाम से पट ब्याह। गड़बड़ी यहीं पर हो गई ! पंडित जी की गुण-मिलान-एक्स्ट्रेसी ने कठिनाई पैदा कर दी। उनकी प्रत्येक पसंद नापसंद, पत्नी की पसंद नापसंद से बिल्कुल

जीवन ऐसा ही है। यह गारंटी से नहीं, आपसी समझदारी से चलता है। वरना पश्चिमी सभ्यता ही गई ! पंडित जी की गुण-मिलान-एक्स्ट्रेसी ने कठिनाई पैदा कर दी। उनकी प्रत्येक पसंद नापसंद, पत्नी की पसंद नापसंद से बिल्कुल

चल रहा है। साहित्य में भीषण सफलता के योग बन रहे हैं। संपादकों द्वारा हमारी रचनाओं के प्रकाशन को लेकर नरम रुख अपनाया जाएगा। बिना लिए-दिए पुस्तकों के प्रकाशन की संभावना बन रही है। इस दौरान प्रकाशित पुस्तकों पर अच्छी रॉयल्टी भी मिलने के प्रबल योग हैं। साहित्य में सम्मान का जुगाड़ किया जाए तो वह भी फलित होगा, लेकिन सब व्यर्थ चला गया। हमारे साहित्य को देखकर चंद्र भी शकमा गया। कुंडली पर साहित्य भारी पड़ गया।

आशा से तो आसमान टंगा है। मैं आशा से अपना साहित्य टांग रहा हूं। हाल ही में इसरो ने चंद्रमा पर एक यान भेजा है। हो सके तो अगली बार नासा की हबलनूर को डेजसे परियोजना की तरह हमारे जैसे लेखकों की किताबों को चंद्रमा पर भेजा जाए। ताकि कम से कम हमारी साहित्य-कुंडली चंद्रमा की सतह पर सुरक्षित पड़ी तो रहेगी।

प्रकृति की मार...



स्पीड न्यूज

बीडीओ ने मनरेगा कर्मियों के साथ की समीक्षा बैठक



खबर मन्त्र संवाददाता

गिद्धौर। प्रखंड सह अंचल कार्यालय सभागार में प्रखंड विकास पदाधिकारी संजीत कुमार सिंह ने शनिवार को सप्ताहिक समीक्षा बैठक मनरेगा कर्मियों के साथ किया। बैठक में 2020-21 के पुराने सभी योजनाओं को एवं सही सलाहमत कार्य संगत पूर्ण योजनाओं को बंद करने का निर्देश दिया है। पेंडिंग आवेस को जल्द से जल्द पूर्ण करने की बात कही। सभी रोजगार सेवक को फील्ड विजिट करने का निर्देश दिया गया है। बरसात में आम बागवानी में कार्य तेजी करने की निर्देश मनरेगा कर्मियों को दिया गया है। एवं पोटो (खेल मैदान) देने की बात कही गई है।

जिले के सभी प्रखंड मुख्यालयों में हुआ जनता दरबार का आयोजन



खबर मन्त्र संवाददाता

चतरा। उपायुक्त अबु इमरान के निर्देशानुसार जिले के सभी प्रखंड क्षेत्रों में प्रखंड विकास पदाधिकारी एवं अंचलाधिकारी के द्वारा रोस्टर अनुसार जनता दरबार का आयोजन किया जा रहा है जिससे सुदूरवर्ती क्षेत्र के लोगों की शिकायतों का निष्पादन प्रखंड मुख्यालय स्तर पर ही किया जा सके। इधर, समाहरणालय स्थित सभा कक्ष में उपायुक्त अबु इमरान के निर्देशानुसार कार्यपालक दंडाधिकारी सह विधि शाखा प्रभारी बिपिन कुमार दुबे, जिला आपूर्ति पदाधिकारी सलमान जफर खिजरी एवं जिला नजारत उप सहायता अमरदीप बलहोत्रा द्वारा जनता दरबार के माध्यम से समस्याओं को लेकर मिलने आए आमजनों की समस्याएं सुनी गईं। उक्त जनता दरबार में मुख्य रूप से भूमि विवाद, राशन कार्ड, प्रधानमंत्री आवास योजना से संबंधित एवं अन्य मामलों शामिल थे।

निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन



टंडवा (चतरा)। शनिवार को आम्रपाली कोल परियोजना के विस्थापित उद्भूत मध्य विद्यालय होन्हे में सीसीएल के आम्रपाली-चंद्रगुप्त क्षेत्र के महाप्रबंधक अमरेश कुमार सिंह के निर्देशानुसार सीसीएल सीएसआर के तहत स्वस्थ जांच शिविर का आयोजन किया गया। इस दौरान विद्यालय में पढ़ रहे कुल 60 बच्चों का स्वास्थ्य जांच कर निःशुल्क दवाई का वितरण किया गया।

सेक्रेड हार्ट स्कूल में एनडीए पर कार्यशाला का आयोजन



कोडरमा। सेक्रेड हार्ट स्कूल में शनिवार को एनडीए पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में मुख्य वक्ता के रूप में लेफ्टिनेंट कर्नल नीरज द्विवेदी मौजूद थे। वहीं शिक्षक शंकर कुमार ने अतिथि का परिचय दिया और विषय प्रवेश कराया। उन्होंने बच्चों को एनडीए के महत्व और एनडीए की परीक्षा पास करने के कई टिप्स बताए। वहीं मुख्य वक्ता लेफ्टिनेंट कर्नल नीरज द्विवेदी ने बच्चों का मार्गदर्शन किया और कहा कि एनडीए में काफी सकोप है। उन्होंने एनडीए की तैयारी करने समेत अन्य जानकारीयां उपलब्ध कराईं। वहीं विद्यालय के एकेडमिक डायरेक्टर प्रमोद शर्मा ने बच्चों का उत्साह बढ़ाते हुए कहा की बच्चे एनडीए में अपना कैरियर बना सकते हैं। उन्होंने कहा कि कैरियर से संबंधित कार्यशालाएं इस विद्यालय में लगातार आयोजित की जाती हैं, जिसका लाभ छात्रों को उठाना चाहिए।

हमर गांव हमर जिम्मेदारी को लेकर उपायुक्त की अध्यक्षता में बैठक संपन्न



कोडरमा। हमर गांव हमर जिम्मेदारी को लेकर उपायुक्त मेधा भारद्वाज की अध्यक्षता में बैठक संपन्न हुआ। जिसमें स्वावलंबी गांव के विभिन्न चरणों में किये जा रहे कार्यों की समीक्षा किया गया। जिसमें स्वावलंबी गांव को देख रहे सामाजिक संगठन प्रदान के प्रोजेक्ट हेड के द्वारा स्वावलंबी गांव में किये जा रहे कार्यों को विस्तार से बताया। उपायुक्त ने सभी संबंधित विभागों को निर्देश दिये कि अपने अपने विभाग में संचालित राज्य सरकार की महत्वाकांक्षी योजनाओं को गांव गांव के सभी लाभुकों को अस्थाहित करें, ताकि उनके आजीविका का साधन का विकास हो। मौके पर डीडीसी ऋतुराज, जिला कृषि पदाधिकारी ब्रह्मदेव साह, जिला पशुपालन पदाधिकारी राम सरीक प्रसाद, कार्यपालक अभियंता पेयजल एवं स्वच्छता प्रमंडल, डीपीएम जेएसएलपीएस समेत अन्य मौजूद थे।

65 करोड़ की लागत से 15 सड़कों का होगा सुदृढीकरण, 67 किलोमीटर सड़क बनेगी मजबूत

मूलभूत सुविधाओं के अभाव से ग्रसित गढ़वा खींच रहा है विकास की लंबी लकीर : मंत्री

खबर मन्त्र संवाददाता

गढ़वा। गढ़वा में 65 करोड़ रुपये की लागत से 15 सड़कों का सुदृढीकरण कार्य किया जाएगा। इसमें 67 किलोमीटर जर्जर सड़कों का कायाकल्प होगा। 15 सड़कों का सुदृढीकरण पांच पैकेज में किया जाएगा। ग्रामीण कार्य विभाग झारखंड सरकार ने इसकी स्वीकृति प्रदान कर दी है। जानकारी देते हुए गढ़वा विधायक झारखंड सरकार के पेयजल एवं स्वच्छता मंत्री मिथिलेश कुमार ठाकुर ने बताया कि पैकेज एक में मेराल प्रखंड के भुईयां टोला चारमुहान पीएमजीएसवाई रोड से लगमा तसरार पीडब्ल्यूडी रोड तक पांच करोड़ 59 लाख नौ हजार 800 रुपये की लागत से 572 किमी सड़क का सुदृढीकरण कार्य किया जाएगा। जबकि देवगाना पीएमजीएसवाई रोड से जरही चारमुहान पीडब्ल्यूडी रोड भाया गेरुआडीह आदिवासी टोला तक चार करोड़ 79 लाख 47 हजार 400 रुपये की लागत से 48 किमी, गढ़वा प्रखंड के उडसुगी मोड़ से उमराटिकर उरांव टोला होते हुए महुपी तक एक करोड़ 34 लाख



46 हजार 900 रुपये की लागत से 137 किमी, चेतना मोड़ से महुपी तक दो करोड़ 15 लाख 48 हजार 200 रुपये की लागत से 25 किमी पथ का सुदृढीकरण कार्य किया जाएगा। पैकेज दो में एनएच 343 ओबरा से छतरपुर कॉलेज तक सात करोड़ 86 लाख 71 हजार 600 रुपये की लागत से 815 किमी, पीडब्ल्यूडी पथ लापो से पीडब्ल्यूडी पथ कमता भाया करचा तक छह करोड़ चार लाख 13 हजार 300 रुपये की लागत से 645 किमी, पैकेज तीन में गढ़वा परिहारा सिवाना से कितारसोती खूद भाया करके बाजार टेनवा तक पांच करोड़ 50 लाख पांच हजार 200 रुपये की लागत से 56 किमी, ग्राम कुंडी नहर से तहले नदी

ट्रांसफर्मर होते हुए महुराम तक 84 लाख 89 हजार रुपये की लागत से 125 किमी, एनएच 343 पचपड़वा से हंसकर सीमा भाया पालिटेक्निक कॉलेज गढ़वा तक पांच करोड़ 68 लाख एक हजार 900 रुपये की लागत से 593 किमी, पैकेज चार में पिपरा नहर पीएमजीएसवाई रोड से राजमुनि चौरी के घर होते हुए माहावीर चौधरी के घर तक तीन करोड़ 27 लाख 98 हजार 200 रुपये की लागत से 362 किमी, हुर पोखर टांड से रिंग रोड भाया पिपरा टांड तीनकोनवा नहर तक तीन करोड़ पांच लाख 98 हजार 600 रुपये की लागत से 32 किमी, हुर चारमुहान से दानरो पुल तक दो करोड़ 27 लाख 16 हजार 700 रुपये की लागत से 265 किमी, मझिआंव गढ़वा मेन रोड दलेली मंदिर से माहेताम सीमा होते हुए चैरीधाम बौराहा बीटी रोड तक चार करोड़ 44 लाख 28 हजार 100 रुपये की लागत से 451 किमी, पैकेज पांच में एल 055- एल 027 गढ़वा शाहपुर पीडब्ल्यूडी रोड से बरही टोला कररुआ खूद तक सात करोड़ 60 लाख 56 हजार 300 रुपये की लागत से 778 किमी तथा पीडब्ल्यूडी रोड अरंगी से

चिरौंजिया होते हुए सरस्वतीवा नदी पुल तक तीन करोड़ 62 लाख 62 हजार 800 रुपये की लागत से 38 किमी सड़क का सुदृढीकरण कार्य किया जाएगा। मंत्री श्री ठाकुर ने कहा कि उक्त सड़कें लंबे समय से काफी जर्जर अवस्था में थी। लोगों को आवागमन में काफी परेशानी हो रही थी। क्षेत्र के लोग इन सड़कों के सुदृढीकरण का लंबे समय से मांग कर रहे थे। अब इन सड़कों का यथाशीघ्र सुदृढीकरण कार्य किया जाएगा। मंत्री ने कहा कि गढ़वा का चप्पे-चप्पे में बेहत आवागमन की सुविधा उपलब्ध करायी जाएगी। इसके लिए वे लगातार प्रयासरत हैं। अब तक अधिसंख्य गांवों में आवश्यकतानुसार नये सड़क का निर्माण तथा जर्जर सड़कों का सुदृढीकरण कार्य किया जा चुका है। निकट भविष्य में शेष बचे अन्य सड़कों का भी निर्माण व सुदृढीकरण कार्य किया जाएगा। मंत्री श्री ठाकुर ने कहा कि पूर्व के जनप्रतिनिधी ने गढ़वा को पूरी तरह से जीर्णोद्धार के लिए प्रयासरत रहे हैं। गढ़वा पूरी तरह से मूलभूत सुविधाओं से ग्रसित था। परंतु अब गढ़वा विकास की लंबी लकीर खींच रहा है।

एक नजर में

अनुमंडल स्तरीय खनन टास्क फोर्स की बैठक संपन्न



खबर मन्त्र संवाददाता

चतरा। उपायुक्त अबु इमरान के निर्देशानुसार अनुमंडल पदाधिकारी सिमरिया सुधीर कुमार दास की अध्यक्षता में अवैध खनन परिवहन एवं भंडारण के रोकथाम हेतु अनुमंडल स्तरीय खनन टास्क फोर्स की बैठक की गई। बैठक में उपस्थित सभी अंचल अधिकारी सिमरिया अनुमंडल, सभी थाना प्रभारी को निर्देशित करते हुए कहा कि एनजीटी न्यायादेश के अनुसार मानसून सत्र दिनांक 10 जून, 2023 से 15 अक्टूबर, 2023 तक की अवधि में राज्यान्तर्गत नदीघाटों से बालू का उठाव पूर्णतः प्रतिबंधित है। अनुमंडल स्तरीय खनन टास्क फोर्स के सभी सदस्य यह सुनिश्चित करें कि किसी भी परिस्थिति में

अवैध खनन परिवहन एवं भंडारण ना हो इसके लिए लगातार छापेमारी अभियान जारी रखें। आगे उन्होंने कहा आगे दिन नदी घाटों से अवैध रूप से बालू के उठाव की शिकायत प्राप्त हो रही है।

प्राप्त शिकायत के विरुद्ध एक्शन प्लान बनाते हुए आवश्यक कार्रवाई करने का निर्देश दिया गया। साथ ही साथ पिपरवार एवं टंडवा क्षेत्र में कोल वाहनों से हो रहे प्रदूषण नियंत्रण को लेकर भी औचक छापे अभियान चलाने को लेकर कई आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए। उक्त बैठक में अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी सिमरिया अशोक प्रियदर्शी, सिमरिया अनुमंडल क्षेत्र के सभी अंचल अधिकारी व थाना प्रभारी समेत अन्य संबंधित उपस्थित थे।

सावन के अंतिम सोमवारी पर ध्वजाधारी धाम में उमड़ेगी शिवभक्तों की भीड़



उमा शंकर

कोडरमा। सावन के अंतिम सोमवारी पर जिला मुख्यालय स्थित ध्वजाधारी धाम में शिवभक्तों की उमड़ने वाली भीड़ को नियंत्रित करने को लेकर प्रशासनिक तैयारियां लगभग पूरी हो चुकी है। उपायुक्त मेधा भारद्वाज व एसपी कुमार गौरव ने संयुक्त रूप से निर्देश जारी कर झुमरीतिलैया के झरनाकुण्ड से लेकर ध्वजाधारी आश्रम, पहाड़ की चोटी तक पर्याप्त मात्रा में पुलिस बल के साथ दण्डाधिकारियों और पुलिस पदाधिकारियों को प्रतिनियुक्त किया गया है, इसके अलावे यातायात नियंत्रित करने को लेकर बागीटांड चेकनाका, लोकाई और स्थानीय हनुमान मंदिर समेत विभिन्न चौक चौराहों पर पुलिस बल के साथ दण्डाधिकारियों को प्रतिनियुक्त

किया गया। डीसी व एसपी द्वारा जारी संयुक्त निर्देश में कहा गया है कि सावन माह के अंतिम सोमवारी को झरनाकुण्ड धाम से ध्वजाधारी धाम तक सुबह 4 बजे से 15 किलोमीटर कांवर पद यात्रा निकाला जाएगा, जिसमें अत्यधिक भीड़ होने की संभावना है, ऐसे में श्रद्धालुओं को यात्रा के दौरान किसी प्रकार की परेशानी न हो, इसको सुनिश्चित करें। उपायुक्त मेधा भारद्वाज ने कहा कि सावन की अंतिम सोमवारी को आयोजित होने वाले कांवर पद यात्रा को शांतिपूर्ण सफल बनाने के लिए विधि व्यवस्था जांच चौबंद किया गया है। वहीं झरनाकुण्ड से लेकर ध्वजाधारी धाम तक सुरक्षा का पुख्ता इंतजाम किया गया है। श्रद्धालुओं को कोई परेशानी न हो इसके लिए यात्रा के दौरान पुलिस और दंडाधिकारी साथ में रहेंगे।

ब्लाइंड मर्डर का खुलासा

साला ही निकला अपने जीजा का हत्यारा, हत्या की साजिश में शामिलगान की पत्नी तथा दूसरा साला भी है शामिल

खबर मन्त्र संवाददाता

इटखोरी। थाना क्षेत्र के कृषि फार्म के समीप एक झोपड़पट्टी होटल में बीते 24 अगस्त को चतरा के शालिग्राम उपाध्याय की हत्याकांड का पुलिस ने 24 घंटे में खुलासा कर लिया है। एसडीपीओ अविनाश कुमार के नेतृत्व में गठित एसआईटी ने इस मामले में मृतक की पत्नी और उसके दो भाईयों को गिरफ्तार किया है। पुलिस का दावा है कि मृतक की पत्नी ही इस हत्याकांड की मास्टरमाइंड है और उसने ही अपने दो भाईयों के साथ मिलकर इस घटना को अंजाम दिया था। पुलिस ने मृतक शालिग्राम उपाध्याय की पत्नी सावित्री देवी व दो साले राहुल कुमार पंडित व विशाल कुमार उर्फ केतु पंडित को गिरफ्तार करते हुए घटना में प्रयुक्त चाकू, अभियुक्त राहुल कुमार का खून से सना शर्ट व पाजामा समेत दो मोबाइल फोन भी जब्त किया है। अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी अविनाश कुमार यादव ने हत्याकांड के उद्भेदन की जानकारी देते हुए बताया कि पुलिस अधीक्षक राकेश रंजन के द्वारा शालिग्राम उपाध्याय हत्याकांड का उद्भेदन करने के लिए



हत्याकांड की जानकारी देते अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी, थाना प्रभारी व अन्य

अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी के नेतृत्व में एक छापेमारी दल का गठन किया गया। जिसमें पुलिस निरीक्षक शिव प्रकाश कुमार, इटखोरी के थाना प्रभारी विनोद कुमार, पुलिस अवर निरीक्षक अनिल कुमार, पुलिस अवर निरीक्षक बंटी यादव तथा सशस्त्र बल के जवान शामिल किए गए। उन्होंने बताया है कि इस हत्याकांड का उद्भेदन करना पुलिस के लिए एक चुनौती था। लेकिन टेक्निकल सर्विलेंस के सहयोग से पुलिस ने 24 घंटे के अंदर हत्याकांड का उद्भेदन कर लिया। शालिग्राम उपाध्याय की हत्या का कारण से पर्दा उठाते हुए अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी ने अभियुकों के द्वारा स्वीकारा कि बयान में दी गई जानकारी को साझा करते हुए बताया कि मृतक शालिग्राम

उपाध्याय की पत्नी सावित्री देवी गंभीर बीमारी से ग्रसित है। लेकिन उसका पति शालिग्राम उपाध्याय उसका इलाज नहीं करता था। बल्कि शराब पीकर अक्सर पत्नी की पिटाई किया करता था। इससे मृतक का साला राहुल कुमार पंडित अपने बहनोई के नाराज रहता था। इसी बीच 24 अगस्त को राहुल ने अपने बहनोई को इटखोरी बुलाया। दिनभर अपने साथ रखने के बाद रात में झोपड़पट्टी होटल में बहनोई के साथ शराब पिया। फिर चाकू से बहनोई के पीठ पर वार करने के बाद गला रेत कर उसकी हत्या कर दी। पुलिस का मानना है कि इस हत्याकांड की साजिश में मृतक की पत्नी सावित्री देवी तथा उसका दूसरा साला विशाल कुमार उर्फ केतु पंडित भी शामिल है।

दस दिवसीय फुटबाल टूर्नामेंट का जिप उपाध्यक्ष ने किया उद्घाटन

फुटबाल टूर्नामेंट में जिप उपाध्यक्ष हुए शामिल

इटखोरी। प्रखंड के नवादा गांव के फुटबाल मैदान में स्टूडेंट क्लब के तत्वावधान में फुटबाल टूर्नामेंट का आयोजन किया गया। फुटबाल टूर्नामेंट के उद्घाटन समारोह में जिला परिषद के उपाध्यक्ष बिरजू तिवारी, जिला परिषद सदस्य सरिता देवी तथा नवादा पंचायत के मुखिया विकास कुमार सिंह विशेष रूप से शामिल हुए। टूर्नामेंट में आठ टीम ने भाग लिया है। उद्घाटन मैच बघमूंडी तथा कोहंडा के बीच खेला गया। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित जिला परिषद के उपाध्यक्ष ने दोनों टीम के खिलाड़ियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि हर व्यक्ति को खेलकूद अपनी दिनचर्या में शामिल करना चाहिए। खेलकूद से शरीर स्वस्थ तथा मजबूत रहता है। उन्होंने फुटबाल टूर्नामेंट का आयोजन करने वाले लोगों की प्रशंसा भी की। साथ ही यह सुझाव भी दिया की खेलकूद का आयोजन प्रत्येक वर्ष करें। कार्यक्रम में भरत साव, महोम्मद मुसरफ, सुनील कुमार, सुभाष राणा आदि मौजूद थे।

कहा खेल से मनुष्य का होता है सर्वांगीण विकास



खबर मन्त्र संवाददाता

कान्हाचट्टी (चतरा)। प्रखंड के तुलबुल पंचायत अंतर्गत डगडगवा मैदान में शनिवार को अंबेडकर स्पोर्ट्स क्लब द्वारा आयोजित दस दिवसीय फुटबाल टूर्नामेंट का विधिवत फीता काटकर उद्घाटन किया गया। उद्घाटन के मौके पर

बतौर मुख्य अतिथि जीप उपाध्यक्ष बिरजू तिवारी एवं विशिष्ट अतिथि मुखिया प्रतिनिधि जय नंदन भारती बासुदेव यादव आदि मुख्य रूप से उपस्थित हुए। उद्घाटन मैच गडिया अमकुदर बनाम हेसाग टीम के बीच खेला गया। खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए श्री तिवारी ने कहा कि

खेल से मानव का सर्वांगीण विकास होता है। उसमें भी फुटबॉल एक ऐसा खेल है। जिससे मनुष्य शारीरिक और मानसिक रूप से मजबूत होता है। उन्होंने खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए कहा कि युवा खिलाड़ी खेल को एक कैरियर के रूप में चुन सकते हैं। वहीं मुखिया प्रतिनिधि ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्र के खिलाड़ियों को इस तरह के टूर्नामेंट में प्रतिभा निखारने का अवसर प्राप्त होता है। वासुदेव यादव ने कहा कि खेल को खेल की भावना से खेलने चाहिए। इस मौके पर चंदन पासवान, कृष्ण रविदास, सीताराम यादव, शंकर भारती, सिक्ंदर सिंह खरवार, बालेश्वर रविदास, अवधेश कुमार सिंह सहित दर्जनों लोग शामिल थे।

सामूहिक विवाह को लेकर जागरूकता अभियान

खबर मन्त्र संवाददाता

गढ़वा। कन्या विवाह एंड विकास सोसाइटी के तत्वावधान में पहली बार 101 जोड़ी कन्याओं का सामूहिक विवाह शहर के टाउन हॉल के मैदान में किया जाएगा। ज्ञात हो कि कन्या विवाह एंड विकास सोसाइटी के द्वारा आगामी छह दिसंबर को 101 कन्याओं के हाथ पीले किए जाएंगे। जिसके आयोजन की तैयारी को लेकर के सोसाइटी के द्वारा गांव से लेकर पंचायत स्तर तक जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। अभियान के दौरान गरीब, असहाय, जरूरतमंद कन्याओं के लिए



अभियान में दौरान पदाधिकारी से मिलने संस्था के सदस्य

सोसाइटी के द्वारा पहल कर रजिस्ट्रेशन कराया जा रहा है। अभियान के दौरान अब तक 45 कन्याओं का रजिस्ट्रेशन हो चुका है। जानकारी देते हुए संस्था के सचिव विकास कुमार माली ने बताया कि संस्था के द्वारा पिछले 13 वर्षों से गरीब, असहाय, जरूरतमंद कन्याओं की शादी सोसाइटी के द्वारा

निःशुल्क करायी जा रही है। शादी करने से पहले संस्था में आवेदन देकर उनका रजिस्ट्रेशन करना अनिवार्य होगा। रजिस्ट्रेशन करने के बाद संस्था के उन्हें प्रमाण पत्र दिया जाएगा। उन्होंने बताया कि शादी के समय कन्या पक्ष के लोगों को संस्था के द्वारा शादी का सारी सुविधा के साथ-साथ विदाई सामग्री भी उपलब्ध कराया जाता है। उन्होंने कहा कि गढ़वा में पहली बार इस तरह का ऐतिहासिक सामूहिक विवाह का आयोजन किया जा रहा है। सामूहिक विवाह को लेकर सोसाइटी के द्वारा आशीर्वाद के रूप में शहर के सभी गण्यम प्रतिष्ठान के लोगों से संपर्क

किया जाएगा। संस्था के द्वारा अब तक के बिहार सहित झारखंड के विभिन्न जिलों में 13 हजार से अधिक कन्याओं का हाथ पीले कर चुकी है। संस्था के सचिव के द्वारा झारखंड सरकार के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन, गढ़वा विधायक झारखंड सरकार के पेयजल एवं स्वच्छता मंत्री मिथिलेश कुमार ठाकुर सहित अन्य मंत्रियों को विवाह में आने के लिए आमंत्रण पत्र भी दिया गया है। मौके पर सहायक सचिव सह झारखंड प्रभारी हसीबुल्लाह अंसारी, कोषाध्यक्ष उषा कुमारी, मीडिया प्रभारी सोनूकुमार, अमन सागर, अमानत खान सहित काफी संख्या में लोग उपस्थित थे।

आइसक्रीम फैक्ट्री के चार लोगों को पुलिस ने अपहरण के मामले में भेजा जेल

खबर मन्त्र संवाददाता

झुमरीतिलैया (कोडरमा)। तिलैया पुलिस ने तीन अलग-अलग मामलों में कुल नौ आरोपियों को हिरासत में लिया है। जिसे शनिवार को जेल भेज दिया गया। जेल भेजे गए आरोपियों में चार युवकों पर दो नाबालिक बच्चों का अपहरण कर फिरोती मांगे जाने का आरोप था। जबकि चार युवक बेल टूटी, तथा एक युवक को अल्पसंख्यक नाबालिक को बहला फुसलाकर भगा ले जाने का आरोप था। जेल भेजे गए आरोपियों के बाबत जानकारी देते हुए तिलैया

थाना प्रभारी विनोद कुमार ने बताया कि इसमें नाबालिक बच्चों के अपहरण कर फिरोती मांगे जाने के मामले को पुलिस ने गंभीरता से लेते हुए आरोपियों के मोबाइल लोकेशन के आधार पर रांची पटना रोड स्थित वैशाली प्रेस के निकट से कैप्टन आनंद के चीयर्स आइस (वर्क) फैक्ट्री से चार युवकों को घर दबोचा। पहले तो आरोपियों ने अनभिज्ञता जाहिर की, फिर पुलिस ने जब तलाशी लेनी शुरू की तो फैक्ट्री के एक बंद कमरे से दो नाबालिक को बरामद कर जेल भेज दिया गया।



चंदवा के अस्पताल को मिली एंबुलेंस



चंदवा। स्वास्थ्य विभाग झारखंड सरकार के द्वारा राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन कार्यक्रम के तहत सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र चंदवा को अत्याधिक सुविधाओं से लैस एक नई 108 एंबुलेंस सेवा की सीमागत मिली है। जल्द ही यह एम्बुलेंस लोगों की सेवा में उपलब्ध होगी, जिससे आम जनों को बड़ी राहत मिलेगी। बता दें कि चंदवा प्रखंड की आबादी लगभग डेढ़ लाख के करीब है साथ ही चंदवा से होकर एनएच 39 रांची-मैदिनीनगर व एनएच 22 रांची-चतरा गुजरती है, जिस कारण आए दिन सड़क दुर्घटनाएँ देखने को मिलती हैं। चंदवा के एक मात्र सरकारी अस्पताल में आपातकालीन स्थिति हमेशा एम्बुलेंस की कमी देखने को मिलती है ऐसे में अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस 108 एम्बुलेंस की सीमागत मिलने से चंदवा वासियों को बड़ी राहत मिलेगी।

मोटरसाइकिल के धक्के से युवक घायल

बालूमाथ। एकीकृत बालूमाथ प्रखंड क्षेत्र के टोटी ग्राम में बाइक के धक्के से एक युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। घटना के संबंध में मिली जानकारी के अनुसार बालचंद उरांव 21 वर्ष पिता बालदेव उरांव ग्राम मंथनिया, टोटी थाना बरियातू निवासी पैदल अपने घर जा रहा था कि पीछे से एक मोटरसाइकिल सवार ने उसे टक्कर मार दी। जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया। घटना के बाद परिजनों के सहयोग से युवक को बालूमाथ सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लाया गया। जहां डॉ. अमरनाथ प्रसाद के द्वारा प्राथमिक उपचार किया गया।

सात दिवसीय फुटबाल टूर्नामेंट का उद्घाटन

चंदवा। चंदवा प्रखंड के बोदा पंचायत अंतर्गत लुकुइया खेल मैदान में आयोजित 7 दिवसीय फुटबॉल टूर्नामेंट का शुभारंभ शनिवार को हुआ। बतौर मुख्य अतिथि झामुमो नेता मो. नौशाद ने फीता काटकर किया। मौके पर मो. नौशाद ने खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए कहा कि खेल को प्रेम व खेल भावना से खेला जाना चाहिए, कड़ी मेहनत व लगन से खेल को खेला जाए तो अपने गांव शहर का नाम रोशन किया जा सकता है। उद्घाटन के उपरांत टूर्नामेंट का पहला मुकाबला झरना ग्रेडा बनाम लुकुइया के बीच खेला गया। मौके पर आयोजन समिति के रोशन, कमलेश, सोनू, विजय, उपेंद्र समेत दर्जनों खेल प्रेमी मौजूद थे।

कृषक सलाहकार समिति की हुई बैठक



बैठक में मौजूद लोग।

गारु। कृषि तकनीकी सूचना केंद्र गारु के सभागार में शनिवार को प्रखंड कृषक सलाहकार समिति की बैठक संपन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता परियोजना निदेशक (आत्मा) लातेहार डॉ. दिवेश कुमार सिंह ने की। उक्त बैठक में परियोजना निदेशक डॉ. दिवेश कुमार सिंह के द्वारा प्रखंड कृषक सलाहकार समिति के सदस्यों एवं कृषक मित्रों के बीच समन्वय स्थापित करते हुए राज्य सरकार और (आत्मा) के द्वारा चलाई जा रही योजनाओं को सुचारु रूप से धरातल पर उतरने की बात कही साथ ही साथ पी. एम. किसान संबंधित के. वाई. सी. के.सी.सी. ऋण माफी के संबंधित के. वाई. सी., ब्लॉक चैन टेक्नोलॉजी के माध्यम से सभी किसानों को जोड़ना एवं बीज वितरण करने की बात कही एन.एफ.एस.एम. जिला परामर्शी बलबीर सिंह ने कहा की एन.एफ.एस.एम. के तहत चलाई जा रही योजनाओं जैसे बीज वितरण, डेमोंस्ट्रेशन, कृषक पाठशाला, आई.पी.एम./आई.एन.एम. किट एवं 50% अनुदान पर कृषि यंत्र आदि के वितरण के लिए आवेदन भरे जा रहे हैं। बैठक में मुख्य रूप से कृषक सलाहकार समिति अध्यक्ष सत्येंद्र उरांव, सहायक तकनीकी प्रबंधक-जितेंद्र कुमार सिंह, कृषक सलाहकार समिति सदस्य, कृषक मित्र एवं किसान भाई उपस्थित थे।

मनरेगा एवं पीएम आवास योजना की समीक्षा बैठक हुई संपन्न

खबर मन्त्र संवाददाता

लखनऊ-उप विकास आयुक्त आलोक शिकारी कच्छप की अध्यक्षता में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से मनरेगा एवं प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत हो रहे कार्यों की समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में उप विकास आयुक्त ने प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत कार्यों की प्रखंडवार समीक्षा के क्रम में सभी प्रखंड विकास पदाधिकारी को नियमित रूप से कार्यों का निरीक्षण कर ससमय कार्य पूर्ण कराने का निर्देश दिया। बैठक में उप विकास आयुक्त ने सभी प्रखंड विकास पदाधिकारियों को कार्ययोजना बनाकर लक्ष्य के अनुरूप आवास योजनाओं को पूर्ण करने का निर्देश दिया। मनरेगा के तहत हो रहे कार्यों की समीक्षा के क्रम में उप विकास आयुक्त ने ज्यदा मानव दिवस सृजित करते हुए ग्रामीणों को रोजगार उपलब्ध कराने का निर्देश दिया। वीर शहीद पोदो हो खेल विकास योजना की समीक्षा के क्रम में उप विकास आयुक्त ने



वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से जानकारी देते अधिकारी।

उपयुक्त स्थल का चयन कर खेल मैदान विकसित करने का निर्देश दिया एवं कहा कि इसमें कहां पर समस्या आ रही है इस बारे में बताएं, ताकि उसका अविलम्ब निष्पादन किया जा सके। इस दौरान उप विकास आयुक्त ने बिरसा हरित ग्राम योजना अंतर्गत बागवानी योजना को लेकर विभिन्न दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि बागवानी योजना से संबंधित जो लक्ष्य दिया गया है, शत- प्रतिशत लक्ष्य हासिल करें। उन्होंने सभी प्रखंड विकास पदाधिकारी को जेएसएलपीएस के साथ समन्वय बनाकर ग्रामीणों को बागवानी योजना से लाभान्वित करने का निर्देश दिया। उन्होंने प्रखंड विकास पदाधिकारियों को मनरेगा अंतर्गत दीदी बाड़ी योजना, बिरसा कूप संवर्धन, वीर शहीद पोदो हो खेल विकास योजना की नियमित समीक्षा कर इनके क्रियान्वयन में अपेक्षित प्रगति लाने का दिशा निर्देश दिया। बैठक में सभी प्रखंड विकास पदाधिकारी, प्रखंड समन्वयक व अन्य उपस्थित थे।

जंगली हाथियों के झुंड ने बालूमाथ के भैसादोन व भगत टोला में 5 घरों को किया ध्वस्त

एजेंसी

बालूमाथ। बालूमाथ प्रखंड क्षेत्र के धाधु पंचायत के भैसादोन ग्राम एवं भगत टोला में शुरुवार की देर रात जंगली हाथियों के झुंड ने उत्पात मचाते हुए पांच ग्रामीणों का घर ध्वस्त कर दिया। वहाँ चार एकड़ में लगे धान के फसल को रौंद कर नष्ट कर डाला। जानकारी देते हुए ग्रामीणों ने बताया की आठ से सँख्या में पहुंचे हाथियों के झुंड ने बिनेश्वर यादव पिता स्व. लरकू यादव ग्राम भैसादोन थाना बालूमाथ निवासी वही भगत टोला में सतीश भगत पिता सुनील भगत,फूलन भगत पिता मीचु भगत, बहू उराँव पिता तुरी उराँव, तेतरा उराँव पिता तुरी उराँव के घर को ध्वस्त कर दिया गया। परीजनों ने कहा कि मैं एक गरीब परिवार से आता हूँ मेरे घर में एक साइकिल तक नहीं है किसी भी प्रकार दैनिक मजदूरी कर अपना जीवन बसर करता हूँ।



शतियारत घर को दिखाते भुक्तभोगी।

पलंग बक्सा को तोड़ दिया। इसके अलावा जंगली हाथियों के झुंड ने छार एकड़ जमीन में लगे विनोद प्रजापति, सराय प्रजापति, मुकेश प्रजापति, सुरेंद्र उराँव, सहेंद्र उराँव, रामदेव गंडू, लरकतू गंडू, लालदेव गंडू, कैलाश प्रजापति, क्रम प्रजापति, नारायण प्रजापति के धान की फसल को नष्ट कर दिया। मामले की सूचना पाकर भाजपा नेता शैलेश सिंह घटनास्थल पहुंचे और ग्रामीणों से मामले की

जानकारी ली। और वन विभाग से मांग करते हुए कहा की वन विभाग मामले को गंभीरता से ले और पीड़ितों को उचित मुआवजा दे। उन्होंने वन विभाग पर आरोप लगाते हुए कहा कि क्षेत्र में लगातार जंगली हाथियों का विचारण है। महज एक सप्ताह के भीतर एक दर्जन से अधिक घरों को हाथियों तोड़ दिया है। बावजूद इसके पीड़ितों को ससमय उचित मुआवजा नहीं मिलता है।

दत्तोपंत टेंगड़ी रोजगार मेला का आयोजन 28 को लातेहार।

श्रम नियोजन प्रशिक्षण एवं कौशल विकास विभाग जिला नियोजनालय लातेहार के द्वारा जिला खेल स्टेडियम के समीप दत्तोपंत टेंगड़ी रोजगार मेला का आयोजन 28 अगस्त को किया जा रहा है। वही नियोजन पदाधिकारी संतोष कुमार ने बताया कि बेरोजगार युवक व युवतियों को निजी क्षेत्र में नियोजित करने के उद्देश्य से सोमवार को पूर्वाह्न 10:00 बजे से अपराह्न 4:00 बजे तक रोजगार मेला का आयोजन किया जा रहा है। रोजगार मेला में 27 कंपनियों बेरोजगार युवक युवतियों को नियुक्त करने के लिए शामिल होंगे। श्री कुमार ने बेरोजगार युवक युवतियों को स्वर्णिम अवसर बताते हुए कहा की अपने शैक्षणिक प्रमाण पत्र के साथ मेले में आकर अपनी योग्यता अनुसार नौकरी ले सकते हैं, विभिन्न पदों के लिए पी टेक तक के छात्रों के लिए रोजगार के अवसर है। नौकरी के लिए पलामू प्रमंडल के लोग भी रोजगार मेला में सम्मिलित हो सकते हैं।

विद्यार्थी अपने सपने चंद्रयान मिशन की तरह ऊंचा रखें : डॉ. एम के जोस

खबर मन्त्र संवाददाता

महुआडांड। संत जेवियर्स महाविद्यालय महुआडांड में शनिवार को ओरिएंटेशन प्रोग्राम के साथ नए शैक्षणिक सत्र का आरंभ हुआ। इस अवसर पर नए विद्यार्थियों का स्वागत फूल और तिलक लगाकर किया गया। सौनियर विद्यार्थियों ने मनमोहक सुंदर गीत और नृत्य भी प्रस्तुत किए। महाविद्यालय के प्राचार्य फादर डॉ. एम के जोस ने सभी विद्यार्थियों का हृदय से स्वागत और अभिनंदन किया। विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि जीवन में ऊंचे सपने और लक्ष्य निर्धारित कर सतत रूप से आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए। पत्रकारों से बात करते हुए उन्होंने कहा की ओरिएंटेशन प्रोग्राम का उद्देश्य विद्यार्थियों को महाविद्यालय के वातावरण, अनुशासन एवं



कार्यक्रम में अतिथि का स्वागत करते लोग।

प्राध्यापकों से परिचित करना है। ओरिएंटेशन में विद्यार्थियों को चार वर्षीय प्रोग्राम, कक्षाओं, टाइम-टेबल, शिक्षकों, पुस्तकालय, प्रयोगशाला और महाविद्यालय में होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों की जानकारी दी गई। इस दौरान फिजिक्स डिपार्टमेंट के द्वारा चंद्रयान मिशन के संबंधित वीडियो और जानकारी भी प्रस्तुत की गई। विद्यार्थियों का पहला दिन ओरिएंटेशन, कैंटीन व दोस्त बनाने और सेल्फी लेने में बीता। कार्यक्रम का आयोजन महाविद्यालय

भाजपा नेता राजेंद्र साहू के ब्रह्म भोज में शामिल हुए विधायक व कई गणमान्य

खबर मन्त्र संवाददाता



राजेन्द्र साहू को श्रद्धांजलि देते विधायक वैद्यनाथ राम।

बालूमाथ। बालूमाथ के भाजपा नेता व कोल व्यवसायी स्व. राजेंद्र प्रसाद साहू के ब्रह्मभोज कार्यक्रम में शनिवार को लातेहार विधायक वैजनाथ राम, लातेहार जिला परिषद अध्यक्ष पुनम देवी, देवती देवी जीप सदस्य टंडवा समेत कई लोगों ने उनके भामाशाह नगर आवास पहुंचकर उनके चित्र पर पुष्प अर्पित करते हुए श्रद्धांजलि दी। एवं ब्रह्म भोज कार्यक्रम में शामिल हुए। विधायक वैजनाथ राम ने कहा कि राजेंद्र प्रसाद साहू का निधन समाज के लिए एक अपूरणीय क्षति है इसकी कमी कभी पूरा नहीं किया जा सकता। इस मौके पर चतरा जिला साहू समाज के जिला अध्यक्ष सरवन साहू, सिमरिया विधानसभा क्षेत्र के उज्ज्वल दास, ललित साहू टंडवा, उमाशंकर साहू चतरा, अमित कुमार साहू सिमरिया, सुदामा प्रसाद लातेहार, दीपक कुमार साहू,



ब्रह्मभोज में शामिल गणमान्य लोग।

कोडरमा, राजद प्रखंड अध्यक्ष प्रीत लाल यादव, युवा नेता अंकित पांडेय, जेएमएम प्रखंड अध्यक्ष एष्वर्य उरांव, राजेश यादव, सुरेश यादव समेत भारी संख्या में लोग शामिल हुए।

जैई के द्वारा लाभुक से फोन पर घूस मांगने का ऑडियो वायरल

महुआडांड। प्रखंड के ग्राम पंचायत गढ़बुढनी पंचायत के 15वें वित के जैई लालधारी साय के द्वारा 15वें वित कार्य में जियो टैग के एवज में लाभुक से फोन पर घूस मांगने का एक ऑडियो सोशल साइट्स पर वायरल हो गया है। वायरल ऑडियो में जैई लालधारी साय लाभुक लुरुगुमी खुर्द के रहने वाले सौदामर अंसारी से बात कर रहे हैं और अपने गारू में होने की बात कह रहे हैं, साथ ही उनके द्वारा गढ़बुढनी पंचायत अंतर्गत बरीधी गांव में बुधन लोहरा के खेत में गाडवाल निर्माण का जियो टैग करने के लिए दो हजार की मांग की जा रही थी बाद में लाभुक सौदामर अंसारी के निवेदन करने पर मामला 1500 में सेट होता है एवं जैई लालधारी साय लाभुक सौदामर अंसारी को जीओ टैग के लिए एक लाख आने के लिए कहते हुए सुनाई पड़ता है। वहीं मामले की पुष्टि के लिए जब जैई लालधारी साय को फोन लगाया गया तो उनका मोबाइल स्विक ऑफ था, जिससे उनका पक्ष नहीं आया जा सका। वहीं इस संबंध में एसडीओ नीत निखिल सुरीन ने कहा कि मामले की जांच कराकर उचित कारवाई की जाएगी।

यूट्यूब पर देखकर युवक ने खुद इलाज का किया प्रयास, स्थिति गंभीर

बालूमाथ। एकीकृत बालूमाथ प्रखंड क्षेत्र के टोटी-हेसला ग्राम में एक युवक ने शनिवार को यूट्यूब पर वीडियो देखकर खुद का इलाज करने का प्रयास किया। जिससे उसकी स्थिति और गंभीर हो गई जिसके बाद उसे बालूमाथ सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लाया गया। जहां प्राथमिक उपचार के बाद उसे बेहतर इलाज हेतु रांची रिम्स रेफर किया गया। घटना के संबंध में मिली जानकारी के अनुसार अवधेश कुमार साव 38 वर्ष पिता दिनेश साव ग्राम टोटी-हेसला थाना बरियातू निवासी को बार-बार पतला लैट्रिन हो रहा था। इसके बाद युवक ने यूट्यूब पर वीडियो देखकर कपूर की गोली खा लिया। जिससे उसकी स्थिति और गंभीर हो गई। जिसके बाद परिजनों ने युवक को बालूमाथ सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लाया जहां डॉक्टर अमरनाथ प्रसाद के द्वारा प्राथमिक उपचार के बाद बेहतर इलाज हेतु रांची रिम्स रेफर कर दिया।

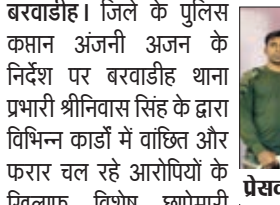


इलाजगत घायल युवक।

हुटाप नर्सरी के पास एनएच पर पेड़ गिरने से 1 घंटे बाधित रहा एनएच 75, लगा रहा भारी जाम

चंदवा। एनएच-75 रांची-मैदिनीनगर मुख्य मार्ग अंतर्गत चंदवा थाना क्षेत्र के हुटाप गांव स्थित हिंडाको नर्सरी के समीप शनिवार की सुबह लगभग पौने दस बजे सड़क किनारे स्थित एक विशालकाय पेड़ एनएच पर गिर गया। खुशकिस्ती रही की जिस वह पेड़ सड़क पर गिरी उस समय कोई वाहन नहीं गुजर रहा था, अन्यथा बड़ा हादसा भी हो सकता था। इधर एनएच पर पेड़ गिरने के बाद सड़क के दोनो छोर पर छोटी-बड़ी वाहनों की भारी जाम लग गयी। घटना के बाद स्थानीय लोगो ने इसकी सूचना वन विभाग को दी व तत्पतर दिखाते हुए सड़क पर गिरे पेड़ को हटाने का प्रयास शुरू किया। लगभग एक घण्टे की कड़ी मेहनत के बाद सड़क पर गिरे पेड़ को हटाया गया, जिसके बाद आवागमन सामान्य हुआ। इस दौरान जाम में फंसे लोग काफी परेशान देखे गए।

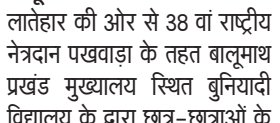
बलात्कार की घटना में 11 साल से फरार आरोपी गिरफ्तार, एक अन्य वारंटी को भी पुलिस ने भेजा जेल



प्रेसवार्ता करते थाना प्रभारी श्रीनिवास सिंह।

बरवाडीह। जिले के पुलिस कप्तान अंजनी अजून के निदेश पर बरवाडीह थाना प्रभारी श्रीनिवास सिंह के द्वारा विभिन्न कार्डों में वांछित और फरार चल रहे आरोपियों के खिलाफ विशेष छापेमारी अभियान चलाया जा रहा है। जिसके तहत थाना प्रभारी श्रीनिवास सिंह ने अपनी पुलिस टीम के साथ मिलकर थाना क्षेत्र के छेवा से पिछले 11 साल से फरार बलात्कार की घटना के आरोपी इमामुद्दीन खान, पिता इदरीश खान को गिरफ्तार किया है। वहीं इसके साथ थाना क्षेत्र के छोटकी पोखरी निवासी स्थाई वारंटी शिप्रासाद सा को भी गिरफ्तार कर न्यायिक दंडाधिकारी के समक्ष पेश करने की कार्रवाई की गई। प्रेस वार्ता करते हुए थाना प्रभारी श्रीनिवास सिंह ने बताया कि जिले के पुलिस कप्तान महोदय के निर्देश और अनुमंडलीय पुलिस पदाधिकारी के कुशल नेतृत्व में थाना क्षेत्र में लगातार फरार चल रहे विभिन्न कार्डों के आरोपियों को गिरफ्तार करने की कार्रवाई की जा रही है। जिसके तहत गुप्त सूचना के आधार पर 11 वर्षों से फरार चल रहे इमामुद्दीन खान और एक अन्य स्थाई वारंटी को भी गिरफ्तार किया गया है। वहीं प्रेस वार्ता में मौके पर सब इंस्पेक्टर राहुल मेहता भी मौजूद थे।

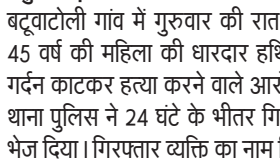
नेत्रदान पखवाड़ा के तहत जागरूकता रैली निकाली



बालूमाथ में आयोजित जागरूकता रैली।

बालूमाथ। जिला स्वास्थ्य समिति लातेहार की ओर से 38 वें राष्ट्रीय नेत्रदान पखवाड़ा के तहत बालूमाथ प्रखंड मुख्यालय स्थित बुनियादी विद्यालय के द्वारा छत्र-छत्राओं के द्वारा नेत्रदान महानंदन जागरूकता रैली निकाली गयी। इस संबंध में जानकारी देते हुए आयुष् चिकित्सक सुरेंद्र कुमार ने बताया कि जिला स्वास्थ्य समिति लातेहार की ओर से 38 वें राष्ट्रीय नेत्रदान पखवाड़ा के तहत 25 अगस्त से 8 सितंबर 2023 तक लोगों के बीच जागरूकता अभियान चलाया जाएगा इसका मुख्य उद्देश्य है कि लोग नेत्रदान करें। नेत्रदान करने से किसी के अंधेरे जीवन में उजाला भरा जा सकता है। मृत्यु उपरांत नेत्रदान करें और किसी की जिंदगी में रोशनी दे इससे करने के बाद भी आपकी आंखें दुनिया देख सकती हैं। प्रतिवर्ष 25 अगस्त से 8 सितंबर तक 15 दिनों का राष्ट्रीय नेत्रदान पखवाड़ा का आयोजन एक अभियान के तहत किया जाता रहा है। उन्होंने बताया कि अभियान का उद्देश्य नेत्रदान को लेकर लोगों में जागरूकता पैदा करने और लोगों को मृत्यु के उपरांत अपनी आंखें दान करने के लिए प्रेरित करने का रहा है। इसके अलावा अभियान के दौरान नेत्रदान के इच्छुक व्यक्ति का सरकार के साथ अनुबंध पर हस्ताक्षर किया जाता है। मौके पर आई टैक्नियन लातेहार नित ध्वज कुमार सहित शिक्षा विभाग की कर्मी एवं शिक्षक उपस्थित थे।

महिला की हत्या करने वाले को पुलिस ने भेजा जेल



गिरफ्तार आरोपी।

महुआडांड। नेतरहाट थाना क्षेत्र के अंतर्गत रसगं बटुवाटोली गांव में गुरुवार की रात रनकी देवी उम्र 45 वर्ष की महिला की धारदार हथियार (टांगी) से गर्दन काटकर हत्या करने वाले आरोपी को नेतरहाट थाना पुलिस ने 24 घंटे के भीतर गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। गिरफ्तार व्यक्ति का नाम दिलेश्वर किसान पिता चकती किसान उम्र 50 वर्ष ग्राम कोरगी बटुवाटोली नेतरहाट का रहने वाला है। इस संबंध में नेतरहाट थाना प्रभारी बंधन भगत ने बताया कि हत्या के आरोपी दिलेश्वर किसान ने हत्या करने की बात स्वीकार कर ली है। वो शराब के नशे में सो रहे रनकी देवी की कुल्हाड़ी से गर्दन काटकर हत्या कर दी थी।



चाईबासा में टेंडर को लेकर आपस में भिड़े ठेकेदार



खबर मन्त्र संवाददाता

चक्रधरपुर। विकास योजनाओं का ठेका हासिल करने के लिए जिले के ठेकेदारों में तनातनी बढ़ती जा रही है। ताजा मामला शनिवार की दोपहर चाईबासा के पुराना डीसी कार्यालय में देखने को मिला। यहां ठेका के लिए हार्ड कॉपी डालने को लेकर ठेकेदारों के दो गुट में हाथापाई हो गई।

मामला इतना बढ़ गया कि सदर एसडीओ शशिंद्र बड़ाईक को हस्तक्षेप करना पड़ा। मालूम हो कि ग्रामीण विकास विशेष प्रमंडल द्वारा निकाले गए निविदा में मनोहरपुर विस क्षेत्र के सोनुवा, गोइलकेरा, मनोहरपुर व आनंदपुर प्रखंड में पीसीसी सड़क का निर्माण होना है। इसी कार्य को हासिल करने के लिए ठेकेदार आपस में भिड़ गए। बताया जाता है कि जिन ठेकेदारों में

थाना प्रभारी का हुआ फेरबदल

दुमका। एसपी पीताम्बर सिंह खेरवार के निदेशानुसार कई थाना के थाना प्रभारी का फेरबदल हुआ। शनिवार को जारी अधिसूचना के अनुसार शिकारीपाड़ा थाना के नए थाना प्रभारी बने इंस्पेक्टर वकार हुसैन। जबकि निवर्तमान थाना प्रभारी को रानेश्वर प्रभाग का इंस्पेक्टर बनाया गया। कोर्ट कार्यालय प्रभारी अतिन कुमार को सदर दुमका प्रभाग का अतिरिक्त इंस्पेक्टर बनाया गया।

मौसमी बीमारी से कारगर ढंग से निपटने का निर्देश

खबर मन्त्र संवाददाता

चक्रधरपुर। मौसमी और बरसाती बीमारी डेंगू-मलेरिया इत्यादि के बढ़ते प्रकोप, सर्पदंश की घटनाओं, दूर दराज के ग्रामीणों का इलाज में आ रही समस्या इत्यादि विभिन्न समस्याओं को लेकर सांसद गोता कोड़ा, कांग्रेस जिला अध्यक्ष चंद्रशेखर दास और अन्य प्रतिनिधियों ने सदर अस्पताल चाईबासा में सिविल सर्जन से मुलाकात की। सांसद गोता कोड़ा ने सारंडा के समीपवर्ती क्षेत्र जामदा, गुवा, किरीचुरु, मनोहरपुर,



गोइलकेरा, सोनुवा आदि क्षेत्रों में डेंगू, मलेरिया का बढ़ते प्रकोप को

सितंबर को होगी झारोटेफ जिला ईकाई गोड्डा के सचिव पद का चुनाव

खबर मन्त्र संवाददाता

गोड्डा। झारखंड ऑफिसर्स, टीचर्स एंड एंग्लोवी फेडरेशन (झारोटेफ) जिला ईकाई गोड्डा के जिला सचिव पद का चुनाव 3 सितंबर को मतदान द्वारा होना सुनिश्चित हुआ है। मतदान उक्त तिथि को +2 बालिका उच्च विद्यालय, गोड्डा में 11बजे पूर्वाह्न से 4 बजे अपराह्न तक होगी। एनएमओपीएस/झरोटेफ के गोड्डा जिला अध्यक्ष डा. सुमन कुमार ने कहा कि 30 जुलाई को प्रथम पेंशन वार्षिकोत्सव सह जिला कार्यकारिणी पुनर्गठन कार्यक्रम स्थानीय नगर भवन में अयोजित किया गया था, जिसमें जिला सचिव पद के अतिरिक्त सभी पदों के लिए सर्व सम्मति बन गई थी। केवल जिला सचिव पद के लिए सर्व सम्मति नहीं बन पाई। जिला मीडिया प्रभारी राजीव साह ने बताया कि 3 सितंबर को होने वाले चुनाव के लिए अधिसूचना जारी की गई है।27 एक्-28 अगस्त को नामंकन की तिथि निर्धारित की गई

है जबकि 29 अगस्त को स्क्रूटनी, नाम वापसी एवम चुनाव चिन्ह वितरण की तिथि निर्धारित की गई है। इस चुनाव में वैसे ऑफिसर्स, टीचर्स या अन्य कर्मी अपना मत डाल सकेगे जो 28 अगस्त तक सदस्यता शुल्क का ऑनलाईन फॉर्म भरेकर एनएमओपीएस/झरोटेफ का सदस्यता ग्रहण कर चुके होंगे। झारोटेफ के जिला सचिव पद हेतु 03 सितंबर को निर्धारित मतदान एवम अन्य चुनावी प्रक्रियाओं के लिए मुरारी प्रसाद शर्मा को मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी अधिकृत किया गया है जबकि आशुतोष पाण्डेय, गौतम कुमार ठाकुर, मीना सोरेन, विकास रंजन, विद्यानंद प्रसाद एवम प्रीती प्रिया को सह निर्वाचन पदाधिकारी अधिकृत किया गया है। जिला अध्यक्ष डा. सुमन कुमार ने निर्धारित अवधि तक अधिक से अधिक संख्या में सदस्यता ग्रहण करने का आह्वान किया एवम कहा कि सचिव पद हेतु मतदान हो रहा है।

झारखण्ड कौशल विकास मिशन सोसाईटी के अंतर्गत कैप का आयोजन

खबर मन्त्र संवाददाता

गोड्डा। कौशल जागरूकता-सह-मोबिलाइजेशन कैम्प का आयोजन आज पथरगामा प्रखंड परिसर में, प्रखंड प्रमुख अवधेश प्रसाद साह, प्रखंड विकास पदाधिकारी अमल, उपप्रमुख, बीस सूत्री अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, विभिन्न पंचायतों के मुखियागण, एवं पंचायत स्तर के जनप्रतिनिधियों की उपस्थिति में किया गया।

मौके पर प्रखंड के विभिन्न क्षेत्रों में कौशल विकास प्रशिक्षण का प्रचार-प्रसार हेतु 02 दिनों के लिए जागरूकता रथ को जनप्रतिनिधियों एवं प्रखंड विकास पदाधिकारी द्वारा हरी झड़ी दिखा



स्वरोजगार हेतु सहयोग प्रदान करने के बारे में बताया गया। साथ ही, बताया गया कि यदि कौशल विकास प्रशिक्षण पूर्ण करने के उपरांत किस कारणवश युवक एवं युवतियाँ रोजगार से नहीं जुड़ पाते है तो प्रशिक्षण पूर्ण होने के 03 माह पश्चात युवकों को 1000 रुपया प्रति

बिहार/झारखंड

ज्वेलरी दुकान से लूट पुलिस अधीक्षक ने अपराधियों को दबोचा

एक अपराधी भागने के क्रम में पानी में डूब कर मर गया दो गिरफ्तार

खबर मन्त्र संवाददाता

गोड्डा। आज पुलिस अधीक्षक गोड्डा नाथू सिंह मीना ने साबित कर दिया की अपराधी कितना भी चुस्त चालाक हो लेकिन पुलिस से बच नहीं सकती। गोड्डा जिले के महगामा अनुमंडल के मुख्यालय में केसरी मोहल्ला स्थित स्वणाभूषण के दुकान दार विजय कलाल की दुकान पर दिन के लगभग 1 बजे 6 अपराधी अपनी बाइक से आए और दुकान के अंदर हथियार के बल पर दाखिल हो गए और मात्र 10 मिनट के अंदर दुकान के अंदर रखे सारे आभूषणों को निकाल कर अपने बैग में भर कर निकल गए अपराधियों ने अपने चेहरे पर नकाब लगा रखे थे उनकी सिर्फ



आंखें दिख रही थी जैसा की दुकान के मालिक ने बताया। उन्होंने दुकान के अंदर और बाहर भी फायर किया और निकल गए। मकान मालिक के छोटे भाई को सर पर चोट भी लगी और काफी खून भी निकला।

सूचना मिलते ही पुलिस अधीक्षक गोड्डा घटना स्थल पर पहुंचे और घेरा बंदी डाल कर अपराधियों को घेरने का प्रयास किया गया। महगामा स्थित ज्वेलरी

कि दुकान में अपराधी डकैती में उद्देश्य से आये थे। दुकान महगामा के बड़े व्यवसायी विजय जायसवाल का है।अपराधी अपने साथ जेवरत समेत कई सामान लूट कर ले गए।इस दौरान हथियार बंद अपराधियों ने फायरिंग भी की जिसमे एक व्यक्ति के घायल होने की सूचना है। वहीं घटना की सूचना मिलते ही पुलिस ने सभी आस पास के थाने को सील कर छापेमारी शुरू कर दी है।

संथाल परगना बिल्डर्स कंपनी पर एफआईआर दर्ज कर संपत्ति जब्त करे हेमंत सरकार: बाबूलाल

खबर मन्त्र संवाददाता

दुमका। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष सह पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी ने संकल्प यात्रा के दौरान दुमका विधानसभा में जमकर हेमंत सरकार निशाना साधा। तेज वारिश के बीच जनसभा को संबोधित किया। बाबूलाल मरांडी ने झामुमो के हेमंत सरकार पर प्रहार करते



हुए कहा कि संथाल परगना बिल्डर्स प्राइवेट लिमिटेड कंपनी के

नाम पर ओछी राजनीति करना झामुमो बंद करे। उन्होंने कहा कि झामुमो को प्रेसवार्ता आयोजित करने की क्या जरूरत है। प्रेसवार्ता तो विपक्ष के लोग करते हैं। उनकी तो सरकार है, पुलिस प्रशासन है वे सीधे कार्रवाई करें। एफआईआर करें और जिसने विधि विरुद्ध काम किया है, अपराध किया है उसकी संपत्ति जब्त करें।





जेल में इमरान खान को जान का खतरा : पत्नी
इस्लामाबाद। पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान के लिए जेल में जान का खतरा है। यह अदेशा जाता है हुए इमरान की पत्नी बुशरा बीबी ने सुप्रीम कोर्ट में हलफनामा दायर किया है। पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान दुनिया भर से मिले उधारों को अवैध तरीके से बेचने से जुड़े तोशाखाना भ्रष्टाचार मामले में तीन साल की जेल की सजा काट रहे हैं। इमरान खान को पांच साल के लिए राजनीति से भी अयोग्य घोषित कर दिया गया है। उनकी पत्नी बुशरा बीबी ने बीती 22 अगस्त को अटक जेल में इमरान खान से मुलाकात की थी। इसके बाद उन्होंने पाकिस्तान सरकार को पत्र लिख कर जेल में इमरान खान की जान को खतरा बताया था।

बांग्लादेश में 50000 लोग बाढ़ में फंसे

ढाका। बांग्लादेश के रंगपुर कम से कम 50,000 लोग बाढ़ में फंस गए हैं। शनिवार को हो रही भारी बारिश से स्थिति और गंभीर हो गई है। तीस्ता नदी का जलस्तर तेजी से बढ़ रहा है। मीडिया रिपोर्ट्स में बांग्लादेश जल विकास बोर्ड (बीडब्ल्यूडीबी) के निर्यात कक्ष के हवाले से कहा गया है कि शनिवार सुबह 6 बजे तीस्ता नदी दलिया बिंदु पर खतरों के स्तर से 10 सेंटीमीटर और रंगपुर के कौनिया बिंदु पर खतरों के स्तर से 33 सेंटीमीटर ऊपर बढ़ रही थी। रंगपुर के कौनिया और गंगावरा उप जिला के चार क्षेत्र के अधिकतर गांव जलमग्न हो गए हैं।

हरियाणा के नूंह जिले में इंटरनेट बंद

चंडीगढ़। हरियाणा सरकार ने शनिवार को नूंह जिले में 28 अगस्त तक मोबाइल इंटरनेट और बल्क एसएमएस सेवा को बंद करने का आदेश दिया जहां पिछले महीने सांप्रदायिक हिंसा हुई थी। सरकार ने हिंदू समूहों के एक बार फिर हथौथा यात्रा निकालने के आह्वान के मद्देनजर यह निर्णय लिया है। सरकार ने सोमवार को आयोजित होने वाली यात्रा से पहले या इसके दौरान असांजिक तत्वों द्वारा सोशल मीडिया के माध्यम से अफवाह फैलाए जाने की आशंका के चलते संबंधित आदेश जारी किया।

मशहूर गीतकार देव कोहली का निधन

मुंबई। बॉलीवुड के दिग्गज गीतकार देव कोहली (82 वर्ष) का शनिवार को निधन हो गया। गीतकार देव कोहली ने मैंने प्यार किया, बागीर, जुड़वा 2, मुसाफिर, शूटआउट एट लोखंडवाला, टैक्सि नंबर नौ दो इलेवन जैसी 100 से अधिक हिट फिल्मों के लिए गाने लिखे हैं। कोहली पिछले दो-तीन माह से कोफिलाबेन धीरूभाई अंबानी अस्पताल में भर्ती थे।

ब्रिटेन में भारतीय मूल के व्यक्ति को 12 साल की सजा

लंदन। ब्रिटेन में मादक पदार्थ की तस्करी की साजिश रचने का दोषी पाए जाने के बाद भारतीय मूल के एक व्यक्ति और उसके सहयोगी को 12 साल कैद की सजा सुनाई गई है। इस संबंध में ब्रिटेन की राष्ट्रीय अपराध एजेंसी (एनसीए) के नेतृत्व में जांच की गई थी। मामले के अनुसार, भारतीय मूल के नागरिक सदीप सिंह राय (37) और उसके सहयोगी बिली हेयरे (43) एक संगठित अपराध समूह से संबंधित थे। दोनों लोग मेक्सिको से एक कार्गो विमान के जरिए ब्रिटेन में 30 किलोग्राम कोकीन और 30 किलोग्राम एम्फेटामिन की तस्करी के प्रयास में शामिल थे।

उसना चावल पर लगा 20% निर्यात शुल्क

नयी दिल्ली। सरकार ने उसना चावल के निर्यात पर 20 प्रतिशत शुल्क लगा दिया है। इस कदम का मकसद पर्याप्त स्थानीय स्टॉक बनाए रखना और घरेलू कीमतों को नियंत्रण में रखना है। वित्त मंत्रालय ने एक अधिसूचना में कहा कि 25 अगस्त को लगाया गया निर्यात शुल्क 16 अक्टूबर, 2023 तक प्रभावी रहेगा।

दो सितंबर को लांच होगा आदित्य-एल1

एजेंसी

बेंगलुरु। चंद्रयान-3 अभियान के सफल रहने के बाद, सूर्य का अध्ययन करने के लिए भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) एक हफ्ते के अंदर आदित्य-एल1 सौर मिशन भेजने की तैयारियों में जुट गया है। आदित्य-एल1 मिशन को दो सितंबर को भेजे जाने की संभावना है। इस अंतरिक्ष यान को सौर कोरोना (सूर्य की सबसे बाहरी परतों) के दूरस्थ अवलोकन और एल1 (सूर्य-पृथ्वी लाग्रेंज बिंदु) पर सौर वायु के यथार्थिथित अवलोकन के लिए तैयार किया गया है। एल1 पृथ्वी से करीब 15 लाख किलोमीटर की दूरी पर है। यह सूर्य के अवलोकन के लिए पहला

सौर मिशन भेजने की तैयारियों में जुटा इसरो

उपग्रह को दो सप्ताह पहले श्रीहरिकोटा स्थित इसरो के अंतरिक्ष केंद्र पर लाया गया

भारतीय अंतरिक्ष मिशन होगा। आदित्य-एल1 मिशन का लक्ष्य एल1 के चारों ओर की कक्षा से सूर्य का अध्ययन करना है। यह अंतरिक्ष यान सात पेलोड लेकर जाएगा, जो अलग-अलग वेव बैंड में फोटोस्फेयर (प्रकाशमंडल), क्रोमोस्फेयर (सूर्य की दिखाई देने वाली सतह से ठीक ऊपरी सतह) और सूर्य की सबसे बाहरी परत (कोरोना) का अवलोकन करने में मदद करेंगे। इसरो के एक अधिकारी ने कहा कि आदित्य-एल1 पूरी तरह से स्वदेशी प्रयास

है, जिसमें राष्ट्रीय संस्थानों की भागीदारी है। बेंगलुरु स्थित इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ एस्ट्रोफिजिक्स (आईआईए) की विजिबल एमिशन लाइन कोरोनाग्राफ पेलोड के विकास में अहम भूमिका है, जबकि पुणे के इंटर-यूनिवर्सिटी सेंटर फॉर एस्ट्रोनीमी एंड एस्ट्रोफिजिक्स ने मिशन के लिए सोलर अल्ट्रावायलेट इमेजर पेलोड विकसित किया है। आदित्य-एल1, अल्ट्रावायलेट पेलोड का उपयोग करके सूर्य की सबसे बाहरी परत और एक्स-रे पेलोड का उपयोग कर सौर क्रोमोस्फेयर परतों का अवलोकन कर सकता है। पार्टिकल डिटेक्टर व मैग्नेटोमीटर पेलोड आविश्कित कर्णों के बारे में

जानकारी प्रदान कर सकते हैं। उपग्रह को दो सप्ताह पहले आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा स्थित इसरो के अंतरिक्ष केंद्र पर लाया गया है। इसरो के एक अधिकारी ने कहा कि प्रक्षेपण दो सितंबर को होने की अधिक संभावना। अंतरिक्ष यान को सूर्य-पृथ्वी लाग्रेंज बिंदु की एल1 हेलो कक्षा के पास स्थापित करने की योजना है। इसरो ने कहा कि एल1 बिंदु के आसपास हेलो कक्षा में स्थापित उपग्रह को सूर्य को बिना किसी ग्रहण के लगातार देखने का बड़ा फायदा मिल सकता है। इसने कहा है कि इससे वास्तविक समय में सौर गतिविधियों और अंतरिक्ष मौसम पर इसके प्रभाव का पता लगाया जा सकेगा।



बेंगलुरु में शनिवार को आदित्य एल1 को देखते प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी।

पाकिस्तानी जासूस हावड़ा में गिरफ्तार

कोलकाता। कोलकाता पुलिस ने पाकिस्तान के लिए कथित रूप से जासूसी करने वाले एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया है और उसके पास से संवेदनशील दस्तावेज बरामद किए हैं। पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने शनिवार को यह जानकारी दी। आरोपी बिहार का रहने वाला है।

कोलकाता पुलिस ने खुफिया जानकारी के आधार पर कार्रवाई करते हुए आरोपी को हावड़ा जिले में उसके घर से शुक्रवार को पकड़ा। अधिकारी ने कहा कि उसे देश की सुरक्षा के लिए घातक गतिविधियों में सीधे तौर पर शामिल पाया गया। उन्होंने बताया कि आरोपी को कई घंटों की पूछताछ के बाद शुक्रवार देर रात गिरफ्तार कर लिया गया।

अधिकारी ने कहा कि उसके मोबाइल फोन से तस्वीरों, वीडियो और ऑनलाइन चैट (संवाद) के रूप में खुफिया जानकारी मिली। यह जानकारी उसने पाकिस्तान के एक सदिग्ध खुफिया एजेंट को भेजी थी। कोलकाता में एक कूरियर सेवा कंपनी में काम करने वाला आरोपी पहले दिल्ली में रहता था।

रोवर से चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर पता चलेगा बर्फ : जॉनसन

एजेंसी

नयी दिल्ली। वैश्विक अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी की विशेषज्ञ और निवेशक कैडेस जॉनसन ने शनिवार को कहा कि चंद्रयान-3 के प्रज्ञान रोवर से यह दिखाने की उम्मीद है कि क्या चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर बर्फ है। उद्योग मंडल सीआईआई द्वारा आयोजित बी-20 सम्मेलन में जॉनसन ने कहा कि भारत का अंतरिक्ष मिशन सिर्फ उसके युवाओं को नहीं बल्कि दुनियाभर के युवाओं को प्रेरित कर रहा है। जॉनसन ने कहा कि रोवर ने अब चंद्रमा पर चहल-कदमी शुरू कर दी है। हम उम्मीद कर रहे हैं कि कल जो तस्वीरें जारी की जाएंगी, वे यह बतायें लगेगी कि क्या दक्षिणी ध्रुव पर बर्फ मौजूद है और क्या उस बर्फ का उपयोग पानी, ऑक्सीजन या ईंधन के रूप में उपयोग किया जा सकता है। जॉनसन उपग्रह कंपनी एसईएस की सह-संस्थापक हैं। इस कंपनी ने भारत में उपग्रह संचार सेवाएं प्रदान करने के लिए जियो के साथ

साझेदारी की है। वे अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी कंपनी नॉर्थस्टार की वाइस चेयरपर्सन भी हैं। उन्होंने कहा कि प्रौद्योगिकियों में प्रगति और लांचरों के सस्ते होने से अंतरिक्ष में जाने की लागत कम हो गई है, जिससे अंतरिक्ष का लोकतंत्रीकरण हो रहा है। जॉनसन ने कहा कि हम ऐसे प्रक्षेपक देख रहे हैं, जो अब और सस्ते हो रहे हैं। भारत ना सिर्फ अपने बल्कि दुनियाभर के युवाओं को प्रेरित कर रहा है। हालांकि, मुझे इसकी बहुत चिंता हो रही है कि हम अंतरिक्ष का उपनिवेशीकरण कर सकते हैं।



साझेदारी की है। वे अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी कंपनी नॉर्थस्टार की वाइस चेयरपर्सन भी हैं। उन्होंने कहा कि प्रौद्योगिकियों में प्रगति और लांचरों के सस्ते होने से अंतरिक्ष में जाने की लागत कम हो गई है, जिससे अंतरिक्ष का लोकतंत्रीकरण हो रहा है। जॉनसन ने कहा कि हम ऐसे प्रक्षेपक देख रहे हैं, जो अब और सस्ते हो रहे हैं। भारत ना सिर्फ अपने बल्कि दुनियाभर के युवाओं को प्रेरित कर रहा है। हालांकि, मुझे इसकी बहुत चिंता हो रही है कि हम अंतरिक्ष का उपनिवेशीकरण कर सकते हैं।

मदुरै : ट्रेन के खड़े डिब्बे में आग से 10 यात्री जिंदा जले

एजेंसी

मदुरै (तमिलनाडु)। तमिलनाडु के मदुरै रेलवे स्टेशन पर एक ट्रेन के खड़े डिब्बे में शनिवार तड़के आग लगने से कम से कम 10 यात्रियों की मौत हो गई। दक्षिण रेलवे ने डिब्बे में अवैध रूप से ले जाए गए गैस सिलेंडर को हादसे की वजह बताया है। जिस डिब्बे में आग लगी, वह एक प्राइवेट पार्टी कोंग (किसी व्यक्ति द्वारा बुक किया गया पूरा डिब्बा) था और उसमें सवार 65 यात्री उत्तर प्रदेश के लखनऊ से मदुरै पहुंचे थे। दक्षिण रेलवे ने एक विज्ञापन में कहा कि आग लगने की घटना में 10 यात्रियों की मौत हो गई। विज्ञापन के मुताबिक, आग बुझाने की कोशिशों में जुटे रेल कर्मियों के अलावा पुलिस, दमकल और बचाव कर्मियों ने डिब्बे से शवों को बाहर निकाला। आग

खाना बनाने के दौरान गैस सिलेंडर फटने से हुआ हादसा

► एक प्राइवेट पार्टी ने कोव को किया था बुक और 65 यात्री लखनऊ से आये थे
► मृतकों के परिजनों को दस-दस लाख मिलेगा मुआजजा

लगने की घटना शनिवार तड़के पांच बजकर 15 मिनट पर हुई और मौके पर पहुंचे दमकलकर्मियों ने सुबह सात बजकर 15 मिनट पर लापटों पर काबू पा लिया। यह एक प्राइवेट पार्टी कोच था, जिसे कल (25 अगस्त को) नागरकोविल जंक्शन पर ट्रेन संख्या 16730 (पुनालुर-मदुरै एक्सप्रेस) में जोड़ा गया था। डिब्बे को अलग कर मदुरै रेलवे स्टेशन पर खड़ा किया गया था। इस डिब्बे में यात्री अवैध रूप से गैस सिलेंडर लेकर आए थे और इसी वजह से आग लगी। डिब्बे में



सवार यात्रियों ने 17 अगस्त को लखनऊ से यात्रा शुरू की थी। उनका कल (27 अगस्त को) चेन्नई जाने का कार्यक्रम था, चेन्नई से वे लखनऊ लौटने वाले थे। जब डिब्बा खड़ा था, तब कुछ यात्री चाय/नाश्ता बनाने के लिए अवैध रूप से लाए गए गैस सिलेंडर का इस्तेमाल कर रहे थे, जिसके कारण डिब्बे में आग लगी। इसकी

भनक लगने पर अधिकांश यात्री बाहर निकल गए। कुछ यात्री डिब्बे को अलग किए जाने से पहले ही प्लेटफार्म पर उतर गए थे। दक्षिण रेलवे के मुताबिक, मृतकों के परिजनों को दस-दस लाख रुपये की अनुग्रह राशि दी जाएगी। कोई भी व्यक्ति आईआरसीटीसी के पोर्टल का उपयोग करके प्राइवेट पार्टी कोच बुक कर सकता है।

पाक के पंजाब में आठ आतंकवादी गिरफ्तार

लाहौर। पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में कानून प्रवर्तन एजेंसियों ने इस्लामिक स्टेट इन इराक एंड सीरिया (आईएसआईएस) और अल-कायदा समेत प्रतिबंधित संगठनों के आठ सदिग्ध आतंकवादियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने शनिवार को यह जानकारी दी। पंजाब पुलिस के आतंकवाद रोधी विभाग (सीटीडी) ने शनिवार को कहा कि पंजाब के विभिन्न इलाकों में चलाए गए अभियानों के दौरान एक बड़ी आतंकी साजिश को नाकाम कर दिया है। सीटीडी के अनुसार, खुफिया सूचना के आधार पर प्रांत के विभिन्न जिलों में 74 अभियान चलाए गए और हथियारों, विस्फोटकों तथा अन्य प्रतिबंधित सामग्रियों के साथ आठ कथित आतंकवादियों को गिरफ्तार किया। आतंकवादी, आईएसआईएस और

► 1200 ग्राम विस्फोटक, दो हथगोले, एक आइडडी और नौ डेटोनेटर बरामद

अल-कायदा समेत प्रतिबंधित संगठनों से जुड़े हैं। आतंकवादियों की पहचान लियाकत खान, मुहम्मद हसन, शान फराज, गुल करीम, आयुब खान, मुहम्मद उमीर, अमीर मुआविया और रिजवान सिद्दीक के रूप में हुई है। वे दाएश, अल-कायदा, तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान, सिपह-ए-सहाबा पाकिस्तान और लश्कर-ए-झांगवी से संबंधित हैं। सीटीडी ने बताया कि सदिग्धों को लाहौर, रावलपिंडी, मुल्तान और गुजरांवाला से गिरफ्तार किया गया है। सदिग्धों के पास से विस्फोटक (1200 ग्राम), दो हथगोले, एक आइडडी बम, नौ डेटोनेटर, साहित्य और आईएसआईएस का एक झंडा बरामद हुआ है।

हेमा मालिनी भी फिल्म में करेंगी किसिंग सीन

मुंबई। करण जोहर की फिल्म रॉकी और रानी की प्रेम कहानी को रिलीज हुए एक महीना हो गया है। इस फिल्म में धर्मेद और शबाना के बीच किसिंग सीन है। ये किसिंग सीन काफी चर्चा में रहा था। कुछ दिन पहले धर्मेद की दूसरी पत्नी और क्वेड्स हेमा मालिनी ने इस किसिंग सीन पर रिएक्शन दिया था। अब हेमा मालिनी ने इस बात का खुलासा किया है कि क्या वह अपने पति धर्मेद की तरह स्क्रीन पर किसिंग सीन करेंगी। मीडिया को दिग् इंटरव्यू में हेमा मालिनी से पूछा गया कि क्या वह धर्मेद-शबाना आजमी की तरह ऑनस्क्रीन किसिंग सीन करने में सहज हैं। तब हेमा मालिनी ने जवाब दिया कि क्यों नहीं, बिल्कुल करूंगी। अगर यह फिल्म के लिए अच्छा और प्रासंगिक है तो शायद मैं इसे कर सकती हूँ। कुछ दिनों पहले हेमा मालिनी ने फिल्म में धर्मेद और शबाना आजमी के किसिंग सीन पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा था कि मैंने अभी तक धरमजी और शबाना आजमी का किसिंग सीन नहीं देखा है। मुझे यकीन है कि लोगों को यह फिल्म पसंद आएगी। मैं धरमजी के लिए बहुत खुश हूँ क्योंकि उन्हें हमेशा कैमरे के सामने रहना पसंद है।



लाल डायरी से डरते हैं गहलोत, भीतर छिपा है काले कारनामों का राज : शाह

जयपुर (हि.स.)। केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने शनिवार को गंगापुर सिटी की धरती से लाल डायरी का जिक्र छेड़कर राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत पर एक बार फिर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि आजकल गहलोत साहब लाल रंग और लाल डायरी से बहुत डरते हैं क्योंकि लाल डायरी के अंदर काले कारनामे छिपे हुए हैं। अखब-करोड़ों रुपये के काले कारोबार का काला चिह्न लाल डायरी में है। शाह शनिवार को गंगापुर सिटी में सहकार किसान सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। सम्मेलन में शाह ने चंद्रयान की सफलता और सहकार मंत्रालय समेत मोदी सरकार की ओर से किसान हितों में किए गए कार्यों का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार के सत्ता में आने के बाद समग्र देश में एक नयी ऊर्जा का संचार हुआ है। शाह ने कहा कि मैं गहलोत साहब को कहने आया हूँ, ये चंद लोग भेजकर नारे लगाते से कुछ नहीं होता है। जरा भी शर्म बची है तो लाल डायरी के मुद्दे पर इस्तीफा देकर चुनाव मैदान में आएँ और हो जाए दो-दो हाथ। उन्होंने टोंकते



हुए कहा कि अभी जो लोग नारे लगा रहे थे, नारे लगाने की बजाय चंद्रयान को बढ़ाया होता और सहकार मंत्रालय बनाया होता तो ये नारे नहीं लगाते पड़ते। शाह ने राजस्थान में भारतीय जनता पार्टी की जीत और केन्द्र में फिर से मोदी सरकार बनाने का आह्वान करते हुए कहा कि राजस्थान ने 2014 और 2019 दोनों लोकसभा चुनावों में सभी सीटों मोदी की झोली में डाली थी। 2024 में भी जनता फिर से सभी सीटों पर भाजपा को जिताने। इसके साथ ही जनता लोकसभा चुनाव से पहले होने वाले 2023 के विधानसभा चुनाव में सत्ता परिवर्तन के लिए भी तैयार है।

दुष्कर्म के आरोप में पूर्व सांसद का बेटा गिरफ्तार

मेरठ। उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले की परतापुर पुलिस पर बहुजन समाज पार्टी (बसपा) के पूर्व सांसद शाहिद अखलाक के बेटे दानिश के खिलाफ दुष्कर्म का मामला दर्ज कर उसे गिरफ्तार कर लिया है। एक पुलिस अधिकारी ने शनिवार को यह जानकारी दी। ब्रह्मपुरी की पुलिस क्षेत्राधिकारी (सीओ) शुचिता सिंह ने शनिवार को बताया कि अखलाक के बेटे दानिश के खिलाफ परतापुर थाने में भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) की धारा 376 के तहत प्राथमिकी दर्ज की गई है। उन्होंने बताया कि पुलिस दल ने शुक्रवार देर रात दानिश के घर पर दबिश देकर उसे गिरफ्तार कर लिया। मेरठ में पूर्व सांसद शाहिद अखलाक के बेटे दानिश पर होटल क्रोम में दुष्कर्म के बाद छात्रा का नहाने हुए अश्लील वीडियो बनाने का भी आरोप है। छात्रा को शक हुआ तो उसने बाहर आकर दानिश का मोबाइल देखा तो उसमें अश्लील वीडियो मिला।

उपराष्ट्रपति का चुनाव लड़ सकते हैं भारतीय मूल के रामास्वामी

एजेंसी

वाशिंगटन। अमेरिका में अगले साल होने वाले राष्ट्रपति चुनाव को लेकर नए-नए समीकरण बन रहे हैं। राष्ट्रपति पद के लिए रिपब्लिकन पार्टी की तरफ से दावेदारी कर रहे भारतीय मूल के विवेक रामास्वामी को लेकर भी दावा किया जा रहा है कि वे पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के साथ उपराष्ट्रपति का चुनाव लड़ सकते हैं। ये अटकलें रामास्वामी और ट्रंप की टीम के बयानों से जन्मी हैं और इसे लेकर चर्चा तेज हो गयी है। भारतीय मूल के विवेक रामास्वामी जोरदार तरीके से रिपब्लिकन पार्टी की तरफ से राष्ट्रपति चुनाव लड़ने का दावा पेश कर रहे हैं। रिपब्लिकन पार्टी के अन्य दावेदारों के साथ बीते बुधवार को हुई पहली बहस के बाद विवेक रामास्वामी की लोकप्रियता भी



लगातार बढ़ रही है। इसके बावजूद विवेक रामास्वामी के एक बयान को इस बात का संकेत माना जा रहा है कि वे अगले साल होने वाले राष्ट्रपति चुनाव लड़ने वाले राष्ट्रपति पद के लिए रिपब्लिकन उम्मीदवार बनने की स्थिति में उपराष्ट्रपति पद के उम्मीदवार बन सकते हैं। दरअसल, एक इंटरव्यू के दौरान विवेक रामास्वामी ने कहा कि वह बतौर राष्ट्रपति ही देश को एकजुट कर सकते हैं। दरअसल जब इस बारे में रामास्वामी से पूछा गया तो उन्होंने कहा कि यह मेरे बारे में नहीं है, अगर यह मेरे बारे में है तो मेरी उम्र के व्यक्ति के लिए यह पद भी

► अमेरिका में अगले साल होने वाले राष्ट्रपति चुनाव को ले बन रहे हैं नये-नये समीकरण
► ट्रंप के राष्ट्रपति उम्मीदवार बनने पर उपराष्ट्रपति पद का चुनाव लड़ेंगे विवेक रामास्वामी

गैर-चीनी पीएम के लिए तैयार सिंगापुर : शनमुगरत्नम

सिंगापुर। सिंगापुर में राष्ट्रपति चुनाव अगले सप्ताह होने वाले हैं। इस चुनाव में भारतीय मूल के उम्मीदवार धरम शनमुगरत्नम ने दावा किया है कि सिंगापुर एक गैर-चीनी प्रधानमंत्री के लिए तैयार है। सिंगापुर के पूर्व उपप्रधानमंत्री धरम ने इस चीनी मूल की आबादी के प्रभुत्व वाले देश में समाज की प्रगति का एक प्रतीक बताया। राष्ट्रपति पद के लिए अपना दृष्टिकोण साझा करने के लिए एक चुनावी बैठक के दौरान धरम ने कहा कि सिंगापुरवासी लोगों को समग्रता से देखते हैं। यदि कोई ऐसा व्यक्ति सामने आता है, जो प्रधानमंत्री के लिए बेहतर उम्मीदवार है, तो उस व्यक्ति को प्रधानमंत्री बनाया जा सकता है। मेरा मानना है कि वे ऐसा कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि यह एक समाज

के रूप में सिंगापुर की प्रगति का प्रतीक है। सिंगापुर किसी गैर-चीनी प्रधानमंत्री के लिए किसी भी समय तैयार है। 66 वर्षीय धरम ने पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा का हवाला देते हुए कहा कि नस्लवाद हर जगह राजनीति में एक कारक है। हालांकि, 40 या 50 साल पहले के विपरीत आज सिंगापुरवासी सभी कारकों को देखते हैं, न कि केवल नस्लवाद को। सिंगापुर के पूर्व उपप्रधानमंत्री धरम ने राष्ट्रपति पद का चुनाव लड़ने के लिए जुलाई में सतारूद पीपुल्स एक्शन पार्टी से इस्तीफा दे दिया था। सिंगापुरवासियों को एक सितंबर को 9वें राष्ट्रपति के लिए मतदान करना है। धरम ने यह भी कहा कि केवल सरकारी नीतियां सिंगापुर को एक निष्पक्ष और बेहतर स्थान नहीं बना सकती हैं।

वर्मा प्रेस प्रा0 लि0 राँची	
Verma's Today	
शृंखला की निम्न पुस्तकें सर्वत्र उपलब्ध हैं—	
Class - X	Class - IX
Hindi ₹ 140	Hindi ₹ 140
English ₹ 140	English ₹ 140
Mathematics ₹ 140	Mathematics ₹ 140
Science ₹ 140	Science ₹ 140
Social Science ₹ 140	Social Science ₹ 140
Sanskrit ₹ 120	Sanskrit ₹ 120
Hindi - B ₹ 140	Hindi - B ₹ 80
Hindi Vyakaran-II ₹ 120	Hindi Vyakaran-II ₹ 120
English Grammar-II ₹ 120	English Grammar-II ₹ 120
Sanskrit Vyakaran-II ₹ 100	Sanskrit Vyakaran-II ₹ 100
Hindi Practical ₹ 55	Hindi Practical ₹ 55
English Practical ₹ 55	English Practical ₹ 55
Maths. Practical ₹ 65	Maths. Practical ₹ 55
Science Practical ₹ 65	Science Practical ₹ 70
S. Science Practical ₹ 65	S. Science Practical ₹ 65
Sanskrit Practical ₹ 55	Sanskrit Practical ₹ 55
Maths. Practical (Combined) ₹ 90	Maths. Practical (Combined) ₹ 75
Science Practical (Combined) ₹ 90	Science Practical (Combined) ₹ 75
English Medium	English Medium
Mathematics ₹ 200	Mathematics ₹ 130
Science ₹ 200	Science ₹ 200
Social Science ₹ 200	Social Science ₹ 130
Maths. Practical ₹ 80	Maths. Practical ₹ 80
Science Practical ₹ 80	Science Practical ₹ 80
S. Science Practical ₹ 80	S. Science Practical ₹ 80
मिलते-जुलते नाम वाली नकली पुस्तकों से सावधान !	

एनके मुरलीधर

दया की देवी, दीन हीनों की मां तथा मानवता की मूर्ति मद्र टेरेसा एक ऐसी संत महिला थीं जिनके माध्यम से हम ईश्वरीय प्रकाश को देख सकते थे। उन्होंने अपना जीवन तिरस्कृत, असहाय, पीड़ित, निर्धन तथा कमजोर लोगों की सेवा में बिता दिया था।

वह संगठन जो उन्होंने अब से तीस वर्ष पहले अपने सहयोगी भाई बहनों की सहायता से गरीबों की भलाई के लिए निःशुल्क शुरू किया था आज एक विश्वव्यापी संगठन बन चुका है। नोबल प्राइज फाउंडेशन ने 1979 में मद्र टेरेसा को विश्व के सर्वोच्च पुरस्कार नोबल पुरस्कार से पुरस्कृत किया था। यह पुरस्कार शान्ति के लिए उनकी प्रवीणता के लिए दिया गया था।

मद्र टेरेसा का जन्म 1910 में युगोस्लाविया में हुआ था। 12 वर्ष की उम्र में ही उन्होंने 'नन' बनने का फैसला किया और 18 वर्ष की आयु में कलकत्ता में 'आइरेश नॉरेटो नन मिशनरी' में शामिल होने का निर्णय लिया। प्रतिज्ञा लेने के बाद वह सेंट मैरी हाईस्कूल कलकत्ता में अध्यापिका बन गयीं।

तीस साल तक अध्यापक के पद पर तथा प्रधान अध्यापक पद पर तथा प्रधान अध्यापक पद पर उन्होंने ईमानदारीपूर्वक कार्य किया। लेकिन उनका मन कहीं और था। कलकत्ता के झोपड़पट्टी में रहने वाले लोगों की पीड़ा और दर्द ने उन्हें बैचने सा कर दिया। 10, सितम्बर 1946 की अपनी अन्तःआत्मा की आवाज को सुनने के बाद उन्होंने कॉन्वेंट को छोड़ दिया और अति निर्धन लोगों के लिए सेवा कार्य करने का निर्णय किया।

उन्होंने पटना के अन्दर निसग का प्रशिक्षण लिया और कलकत्ता की गलियों में घूम-घूम कर दया और प्रेम का मिशन प्रारम्भ किया। वह कमजोर त्याग हुए और मरते हुए लोगों को सहारा देती थीं। उन्होंने कलकत्ता निगम से एक जमीन का टुकड़ा मांगा और उस पर एक धर्मशाला स्थापित की। इस छोटी सी शुरुआत के बाद उन्होंने जो प्रगति की वह अपने आप में महत्वपूर्ण थी। उन्होंने 98 स्कूटर, 425 मोबाइल डिस्पेंसरीज, 102 कुष्ठ रोगी, दवाखाना और 48 अनाथालय और 62 ऐसे गृह बनाये जिसमें दरिद्र लोग रह सके।

मद्र टेरेसा एक त्याग की मूर्ति थीं। वह जिस घर में रहती थीं वहां वह नंगे पैर चलती थीं और वहां भी वह एक छोटे से कमरे में रहती थीं और अतिथियों से मिला करती थीं। उस कमरे में केवल एक मेज और कुछ कुर्सियां होती थीं। मद्र टेरेसा प्रत्येक व्यक्ति से मिला करती थीं और सभी से प्रेम भाव

अकेलापन सबसे भयानक गरीबी है। मुस्कुराहट से ही शान्ति की शुरुआत होती है। हम भविष्य से डरते हैं क्योंकि हम आज को बर्बाद कर रहे हैं। मैं सफलता के लिए नहीं बल्कि विश्वास के लिए प्रार्थना करती हूँ। भीठे बोल बोलने में आसान होते हैं लेकिन उनकी गूँज अनंत तक होती है। आप जहां भी जाएं वहां प्यार फैलाएं, जो आपके पास आए वह खुश होकर ही लौटे। अगर आप 100 लोगों की सहायता नहीं कर सकते तो केवल एक की ही मदद कर दो। बात यह नहीं है कि हम कितना देते हैं, महत्वपूर्ण यह है कि हम कितना प्यार से देते हैं। यदि आप एक सौ लोगों को भोजन नहीं करा सकते हैं, तो सिर्फ एक को ही भोजन करवाएं। मैं चाहती हूँ की आप अपने पड़ोसी के बारे में चिंतित रहें, क्या आप अपने पड़ोसी को जानते हो? कल तो चला गया, आने वाला कल अभी आया नहीं, हमारे पास सिर्फ आज है, आइए शुरुआत करें।

के साथ मिलती थीं और उनकी बात को सुनती थीं। उनके तौर तरीके बड़े ही विनम्र हुआ करते थे। उनकी आवाज में सज्जना और विनम्रता झलकती थी और उनकी मुस्कुराहट हृदय की गहराइयों से निकला करती थी। सुबह से लेकर शाम तक वह अपनी मिशनरी बहनों के साथ व्यस्त रहा करती थीं। काम समाप्ती के बाद वह पत्र आदि पढ़ा करती थीं जो उनके पास आया करते थे। मद्र टेरेसा वास्तव में प्रेम और शान्ति की दूत थीं। उनका विश्वास था की दुनिया में सारी बुराईयाँ घरसे पैदा होती हैं। अगर घर में प्रेम होगा तो वह स्वाभाविक रूप से विश्व के सभी लोगों में शान्ति बने। उनका संदेश था हमें एक झुंड़ दूसरे से इस तरह से प्रेम करना चाहिए जैसे ईश्वर हम सबसे करता है। तभी हम विश्व में, अपने देश में, अपने घर में तथा अपने हृदय में शान्ति ल सकते हैं। (लेखक चीफ सब एडिटर खबर मन्त्र है। 9934345750)

मानवता की प्रतिमूर्ति मद्र टेरेसा



प्रेरक घटना तीन

मद्र टेरेसा से एक बार एक इंटरव्यू करने वाले ने पूछा : जब आप प्रार्थना करती हैं तो ईश्वर से क्या कहती हैं?
मद्र ने जवाब दिया : मैं कुछ कहती नहीं, सिर्फ सुनती हूँ। इंटरव्यू करने वाले को ज्यादा तो समझ नहीं आया, पर उसने दूसरा प्रश्न पूछा - तो फिर जब आप सुनती हैं तो ईश्वर आपसे क्या कहता है ?

मद्र : वह भी कुछ नहीं कहता, सिर्फ सुनता है। कुछ देर मौन छा गया, इंटरव्यू करने वाले को आगे का प्रश्न समझ ही नहीं आ रहा था कि अब क्या किया जाए। थोड़ी देर बाद इस मौन को तोड़ते हुए मद्र ने खुद कहा- क्या आप समझें, जो मैं कहना चाहती थी, मुझे माफ कीजिएगा मेरे पास आपको समझाने का कोई दूसरा तरीका

नहीं है। मद्र टेरेसा ने डॉक्टर से तुरंत प्रश्न किया, 'अगर आपका बेटा इस स्थिति में आपके पास लाया जाता, तो क्या आप उसके घावों पर दवाई लगाने के लिए दस्ताने पहनने तक का इंतजार करते?' ऐसी मां थीं मद्र टेरेसा।

कैसे बनते हैं संत

कैथोलिक चर्च के संत की उपाधि हासिल करने के लिए दो चमत्कार की पुष्टि होना आवश्यक होता है। कैथोलिक ईसाइयत में संत की उपाधि दिए जाने की प्रक्रिया काफी व्यवस्थित और समयसाध्य है। इस प्रक्रिया में 'संत' घोषित करने के चार चरण होते हैं। पहले चरण में व्यक्ति को 'प्रभु का सेवक' घोषित किया जाता है। दूसरे चरण में 'पूज्य' माना जाता है। तीसरे चरण में पोप द्वारा 'धन्य' माना जाता है। 'धन्य' घोषित करने के लिए एक चमत्कार की पुष्टि होना जरूरी है। अंतिम चरण में 'संत' घोषित किया जाता है।

कम से कम दो चमत्कार जरूरी

संत की उपाधि दिये जाने के लिए कम से कम दो चमत्कारों की पुष्टि होना आवश्यक है। चमत्कार उस संत द्वारा या उसकी समाधि पर की गई प्रार्थना द्वारा किसी असाध्य रोग के ठीक होने की शकल में होता है। वेंटिकन की एक समिति इन चमत्कारों की जांच करती है जिसमें कुछ धर्मगुरु और डॉक्टर होते हैं। जब यह समिति चमत्कारों की पुष्टि कर देती है तब पोप वेंटिकन के समारोह में 'संत' की उपाधि प्रदान करने की अधिकारिक घोषणा करते हैं।

मद्र टेरेसा से पहले किसे मिली उपाधि

मद्र टेरेसा के पहले चमत्कार को वर्ष 2003 में पोप जॉन पॉल ने मान्यता दी थी। माना जाता है कि मद्र टेरेसा ने पेट के ट्यूमर से पीड़ित एक भारतीय महिला को बीमारी से निजात दिलाई थी। इससे पहले वर्ष 2014 में फादर कुरियाकोज चवारा और सिस्टर यूक्रेशिया को भी संत की उपाधि मिली थी।

मद्र टेरेसा की प्रेरणादायी घटनाएं

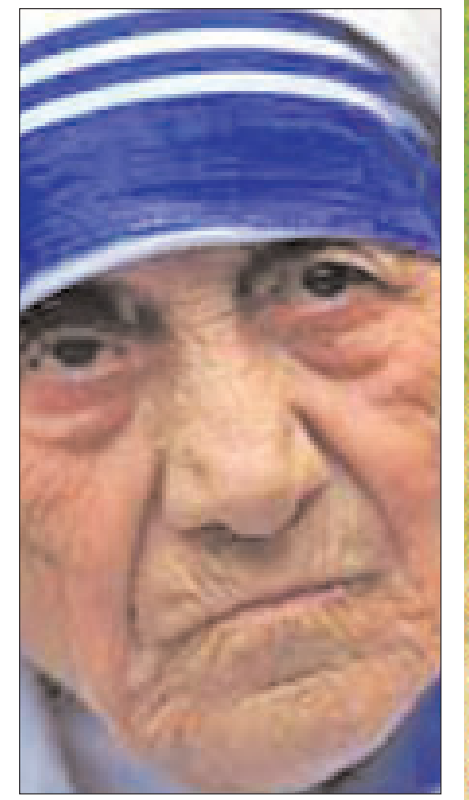
नोबेल पुरस्कार विजेता मद्र टेरेसा अपने नाम के अनुरूप वास्तव में एक सच्ची मां थीं। एक दिन वे लंदन से आए एक डॉक्टर को निर्मल हृदय (जहां कुछ रोगियों का इलाज किया जाता था) का अवलोकन करा रही थी, तभी एक ऐसे कुष्ठ रोगी को वहां लाया गया, जिसके शरीर पर कई जगह घाव हो गए थे और उन घावों से खून और मवाद बह रहा था। मद्र टेरेसा लंदन से आए डॉक्टर को वहीं छोड़कर तुरंत उस रोगी के पास पहुंची और उसके घावों को अपनी साड़ी के पल्लू से पोछने के बाद उन पर अपने हाथों से दवाई लगाने लगीं। तब तक वे डॉक्टर महोदय भी वहां पहुंच गए, मद्र को कुष्ठ रोगी के घावों पर दवाई लगाते हुए देखकर उन्होंने कहा, 'मद्र आप घावों पर दवाई लगाने से पहले कम से कम अपने हाथों पर दस्ताने तो पहन लेतीं'।

प्रेरक घटना दो

मद्र टेरेसा एक सच्ची सेवक थीं। एक बार मद्र टेरेसा कुष्ठ रोग से पीड़ित रोगियों के इलाज के लिए कोलकाता में दुकान-दुकान जाकर चंदा एकत्र कर रही थीं। इसी सिलसिले में वे एक अमीर व्यापारी की दुकान पर पहुंची, जो अपनी दुकान पर बैठे-बैठे पान चबा रहा था। जब मद्र टेरेसा ने उस व्यापारी के आगे अपना सीधा हाथ फैलाकर कहा कि कुष्ठ रोग से पीड़ित भाइयों के लिए कुछ देने की कृपा करें, तब उस व्यापारी ने मद्र के सीधे हाथ पर पान की पीक थूक दी। इस पर मद्र टेरेसा बिल्कुल भी विचलित नहीं हुईं और उन्होंने तुरंत अपना सीधा हाथ पीछे करके कहा, 'यह तो मेरे लिए हो गया' और फिर अपना बायां हाथ आगे फैलाते हुए अत्यंत प्यार से बोली, 'अब कृपा कर मेरे कुष्ठ रोगी भाइयों के लिए कुछ देने का कष्ट करें'। उस व्यापारी ने सोचा भी नहीं था कि किसी के हाथ पर थूकने के बाद भी वह बिल्कुल विचलित और क्रोधित नहीं होगा और उल्टा अपना प्यार प्रदर्शित करेगा। वह तुरंत मद्र के चरणों में गिर पड़ा। अपने किए की माफी मांगी और उसके बाद मद्र टेरेसा की मदद भी की।

मद्र टेरेसा के अनमोल वचन

- जिस व्यक्ति को कोई चाहने वाला न हो, कोई ख्याल रखने वाला न हो, जिसे हर कोई भूल चुका हो, मेरे विचार से वह किसी ऐसे व्यक्ति की तुलना में जिसके पास कुछ खाने को न हो, कहीं बड़ी भूख, कहीं बड़ी गरीबी से ग्रस्त है। यदि हमारे मन में शान्ति नहीं है तो इसकी वजह है कि हम यह भूल चुके हैं कि हम एक दूसरे के हैं।
- यदि आप सौ लोगों को नहीं खिला सकते तो एक को ही खिलाइए।
- शान्ति की शुरुआत मुस्कुराहट से होती है।
- जहां जाइए प्यार फैलाइए जो भी आपके पास आए वह और खुश होकर लौटे।
- सबसे बड़ी बीमारी कुष्ठ रोग या तपेदिक नहीं है, बल्कि अवांछित होना ही सबसे बड़ी बीमारी है।
- चमत्कार यह नहीं की हम यह काम करते हैं बल्कि यह है कि ऐसा करने में हमें खुशी मिलती है।
- प्यार की भूख को मिटाना रोगी के भूख को मिटाने से कहीं ज्यादा जरूरी है।
- अकेलापन सबसे भयानक गरीबी है।



2003 : धन्य घोषित

ऐसा माना जाता है कि दुनिया में लगभग सारे लोग सिर्फ अपने लिए जीते हैं पर मानव इतिहास में ऐसे कई मनुष्यों के उदहारण हैं जिन्होंने अपना तमाम जीवन परोपकार और दूसरों की सेवा में अर्पित कर दिया। मद्र टेरेसा भी ऐसे ही महान लोगों में एक हैं जो सिर्फ दूसरों के लिए जीते हैं। मद्र टेरेसा ऐसा नाम है जिसका स्मरण होते ही हमारा हृदय श्रद्धा से भर उठता है और चेहरे पर एक खास आभा उमड़ जाती है। मद्र टेरेसा एक ऐसी महान आत्मा थीं जिनका हृदय संसार के तमाम दीन-दरिद्र, बीमार, असहाय और गरीबों के लिए धड़कता था और इसी कारण उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन उनके सेवा और भलाई में लगा दिया। उनका असली नाम 'अग्नेस गोंझा बोयार्जिजू' था। अलबेनियन भाषा में गोंझा का अर्थ फूल की कली होता है। इसमें कोई दो राय नहीं है कि मद्र टेरेसा एक ऐसी कली थीं जिन्होंने छोटी सी उम्र में ही गरीबों, दरिद्रों और असहायों की जिन्दगी में प्यार की खुशबू भर दी थी। अपना पूरा जीवन गरीबों की सेवा में समर्पित करने वाली मद्र टेरेसा को संत की उपाधि दी जाएगी। पोप फ्रांसिस ने अपना पूरा जीवन गरीबों की सेवा में समर्पित करने वाली नोबेल शान्ति पुरस्कार विजेता मद्र टेरेसा को चार सितंबर को रोमन कैथोलिक संत का दर्जा दिए जाने की घोषणा की। मद्र टेरेसा का निधन 87 वर्ष की उम्र में वर्ष 1997 में हुआ था। मद्र टेरेसा की मौत के बाद उनके दो चमत्कारों की वजह से उन्हें संत माना गया है। गौरतलब है कि इस सम्मान को पाने के लिए उस शख्स को दो, चमत्कारों की जरूरत होती है। मद्र टेरेसा को 2003 में धन्य घोषित किया गया था। पोप फ्रांसिस ने गत दिसंबर में मद्र टेरेसा के दूसरे चमत्कार को मान्यता दे दी थी। यह चमत्कार ब्रेन ट्यूमर से पीड़ित ब्राजील के एक व्यक्ति से जुड़ा है, जिसे मद्र टेरेसा ने इस बीमारी से निजात दिलाई थी।

मद्र टेरेसा एक परिचय

जन्म : 26 अगस्त, 1910, स्कॉप्जे, (अब मसेदोनिया में)
 मृत्यु : 5 सितंबर, 1997, कलकत्ता, भारत
 कार्य : मानवता की सेवा, 'मिशनरीज ऑफ चैरिटी' की स्थापना
 नोबेल शान्ति पुरस्कार 1979 में

